Date. Page. 1

मानव भूगोल

→ एक अध्ययन क्षेत्र के रूप में समाकलनात्मक, आनुभाविक एवं व्यवहारिक है।

→ किसी भी मठ घटना और स्थान के संदर्भ में भौगोलिक ढंग से अध्ययन किया जाता है।

→ एक विषय के रूप में भूगोल, पृथ्वी को मानव का घर समझता है और उन सभी तथ्यों का अध्ययन करता है। जिन्होंने मानव को पाला है।

→ इसमें प्रकृति व मानव के अध्ययन पर जोर दिया है।

→ ये दोनों अविभाज्य तत्व है, इन्हें समग्रता में देखा जाना चाहिए

पृथ्वी के दो प्रमुख घटक:-

1. भौतिक कारक (प्रकृति)
   भू- आकृति, मृदा, जलवायु, जल, वनस्पति, जीव -जन्तु
   - भौतिक भूगोल केन्द्र बिन्दु
     ↓
     प्रकृति

2. मानव निर्मित पर्यावरण (सांस्कृतिक दृश्य)
   घर, गांव, सड़के, रेल खेत, उद्योग, बंदरगाह
   - मानव भूगोल केन्द्र बिन्दु
     ↓
     मानव के क्रियाकलाप

मानव भुगोल की प्रमुख 3 परिभाषाएँ है-

1. रेटजेल की परिभाषा -
   "मानव भूगोल मानव समाजों और धरातल के बीच संबंधों का संश्लेषित अध्ययन है।"

2. एलन सेंपल के अनुसार -
   " मानव भूगोल अस्थिर पृथ्वी तथा क्रियाशील मानव के बीच परिवर्तनशील सम्बन्धों का अध्ययन है।"

Rajsarthi.in

3. विडाल-डी-ला ब्लाश -
"मानव भूगोल में पृथ्वी को नियंत्रित करने वाले भौतिक नियमों तथा पृथ्वी पर रहने वाले जीवों के मध्य संबंधों का अधिक संश्लेषित ज्ञान शामिल है।

मानव भूगोल के क्षेत्र व उपक्षेत्र -

⇒ मानव भूगोल - क्षेत्र -
→ नगरीय भूगोल
→ जनसंख्या भूगोल
→ आवास भूगोल

⇒ सामाजिक भूगोल- उपक्षेत्र
- व्यवहारिक भूगोल
- सामाजिक कल्याण का भूगोल
- अवकाश का भूगोल
- सांस्कृतिक भूगोल
- लिंग भूगोल
- ऐतिहासिक भूगोल
- चिकित्सा भूगोल

⇒ राजनीतिक भूगोल - उपक्षेत्र
- निर्वाचन भूगोल
- सैन्य भूगोल

⇒ आर्थिक भूगोल · उपक्षेत्र
- पर्यटन भूगोल
- संसाधन भूगोल
- कृषि भूगोल
- उद्योग भूगोल
- विपणन भूगोल
- अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का भूगोल

Rajasthan.in

मानव भूगोल की प्रमुख विचारधाराएँ -

1. आरम्भिक अवस्था में मानव, प्रकृति से अधिक प्रभावित था.
कारण - (i) उस समय प्रौद्योगिक का विकास नहीं हुआ।
(ii) मानव की सामाजिक अवस्था भी आदिम थी।

• मानव ने प्रकृति के अनुसार अपने आप को ढाल लिया
→ मानव का प्रकृतिकरण प्रभाव -
- मानव प्रकृति की सुनता था, उसके भय से उसकी पुजा करता था, प्रकृति का गुलाम था।
- मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रकृति पर निर्भर था।
★ इसे पर्यावरणीय निश्चयवाद कहा गया।

आदिम मानव समाज और प्रकृति की इच्छा शक्तियों के बीच होने वाली अन्योन्य क्रिया को पर्यावरणीय निश्चयवाद कहा गया

2. समय के साथ मानव, प्रकृति के नियमों को समझने लगा, इसके बाद प्रौद्योगिकी को विकसित करने में महत्वपूर्ण है।
★ प्रौद्योगिकी - समाज के सांस्कृतिक विकास के स्तर की सुचक होती है
उदाहरण - (i) घर्षण व ऊष्मा के ज्ञान के ज्ञान से अग्नि की खोज।
(ii) DNA व आनुवांशिक नियमों से बिमारियों का इलाज।
(iii) गति के नियमों से बिमारियों वायुयान बनाया

★ प्राकृतिक संसाधन सम्भावनाओं को जन्म देते हैं।
• मानवीय क्रियाएँ सांस्कृतिक भूदृश्य का निर्माण करती है, जैसे - घर, नगर, खेत, स्कूल आदि।
• मानव प्रकृति को अपने अनुसार ढाल लेता है।

Rajasthan.in

प्रकृति का मानवीकरण -
मानव प्रकृति का स्वामी - स्वतंत्रता की स्थिति
संभववाद - प्रकृति अवसर प्रदान करती है और मानव उनका उपयोग करता है तथा धीरे-धीरे प्रकृति का मानवीकरण हो जाता है।

मानव का प्राकृतीकरण → सम्भववाद
प्रकृति का मानवीकरण → पर्यावरणीय निश्चयवाद

नवनिश्चयवाद (रूको और जाओ) - ग्रिफिथ टेलर
यातायात नियमों से तुलना

- यहां न तो नितांत आवश्यकता की स्थिति है और न ही नितांत स्वतंत्रता की स्थिति है।
- हम प्रकृति के नियमों की पालना करके ही उस पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।
- यह विचारधारा पर्यावरण को बिना नुकसान किये ही सम्भावनाओं को जन्म देने पर जोर देती है।
- जैसे - औद्योगीकरण करते हुए जंगलो को नष्ट होने से बचाना
- इसमें मानव; प्रकृति के साथ संतुलन बनानें का प्रयास करता है।

⇒ 1970 का दशक - 3 नयी विचारधाराएँ -

1. कल्याणपरक विचारधारा -
इसका सम्बन्ध सामाजिक कल्याण के अन्य पक्षों से है, जैसे - शिक्षा, स्वास्थ्य आदि।

Rajsarthi.in

3 आमूलवादी विचारधारा -
इसका संबंध गरीबी के कारण, बंधन और सामाजिक असमानता है।
इसमें मार्क्स के सिद्धांत का प्रयोग किया गया है।

4. व्यवहारवादी विचारधारा -
इससे प्रत्यक्ष अनुभव के प्रयोग के साथ-2 मानव जाति, प्रजाति, धर्म आदि पर आधारित सामाजिक वर्गों पर जोर दिया गया है।

मानव भूगोल का क्रमिक विकास

	समय अवधि	उपागम	मुख्य लक्षण
1.	आरंभिक : उपनिवेश युग	अन्वेषण व विवरण	नए क्षेत्रों की खोज व वर्णन
2.	उत्तर उपनिवेश युग	प्रादेशिक विश्लेषण	प्रत्येक प्रदेश के सभी तथ्यों का वर्णन
3.	अन्तर युद्ध अवधि के बीच 1990 का दशक	क्षेत्रीय विभेदन	प्रदेशों की विभिन्नता को पहचानना
4.	1950 के अन्त से 1960 के दशक के अन्त तक	स्थानिक संगठन	मात्रात्मक क्रान्ति हुई, मानवीय घटनाओं के अध्ययन मे भौतिक नियमों, कम्प्यूटर मानचित्र व सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग हुआ मुख्य उद्देश्य - विभिन्न मानवीय कारणों के मानचित्र योग्य पैटर्न की पहचान करना।
5.	1970 का दशक	मानवतावादी, आमूलवादी व्यवहारवादी विचारधारा	

Rajsarthi.in

Date.
Page. 6

समय अवधि	उपागम	मुख्य लक्षण
6. 1990 का दशक	उत्तर - आधुनिकवाद	स्थानीय संदर्भों को अपने आप में समझने के महत्त्व पर जोर दिया।

Rajsarthi.in

Date.
Page. (7)

2. विश्व जनसंख्या

किसी देश के निवासी ही उसके वास्तविक संसाधन होते हैं। 21 वीं सदी के शुरू में 600 करोड़ (6 अरब) से अधिक थी।

जनसंख्या वितरण -
पृथ्वी पर लोगों का फैलाव असमान पाया जाता है।

जानी बी॰ क्रेसी कथन -
एशिया में बहुत अधिक स्थानों पर कम लोग और कम स्थान पर ज्यादा लोग रहते हैं।

- विश्व की 90% जनसंख्या 10% भू भाग पर निवास करती है तथा 90% भु - भाग पर 10% लोग रहते हैं।

= 60% जनसंख्या विश्व मे 10 देशों मे निवास करती है :-

1. चीन
2. इण्डिया
3. अमेरिका
4. इण्डोनेशिया
5. ब्राजील
6. पाकिस्तान
7. नाइजीरिया
8. बांग्लादेश
9. रूस
10. मेक्सिको

जनसंख्या घनत्व = $\frac{\text{जनसंख्या}}{\text{क्षेत्रफल}}$ व्यक्ति / वर्ग किमी.

Rajsathi.in

♦ जनसंख्या वितरण (घनत्व) को प्रभावित करने वाले कारक

I भौगोलिक कारक	II आर्थिक कारक	III सामाजिक और सांस्कृतिक कारक
जल उपलब्धता,	औद्योगीकरण	
भू - आकृति	नगरीकरण	
जलवायु	खनिज	
मिट्टी		

B - जीवित बच्चों की संख्या

P - वर्ष के मध्य जनसंख्या

जनसंख्या वृद्धि -

किसी क्षेत्र में दो समय अन्तरालों के बीच होने वाली जनसंख्या परिवर्तन को जनसंख्या वृद्धि कहते है।

धनात्मक वृद्धि + ऋणात्मक वृद्धि -

जनसंख्या वृद्धि को प्रकट करने के दो रूप है

1. निरपेक्ष संख्या -
2. प्रतिशत -

$$\frac{P_2 - P_1}{P_1} \times 100$$

P_2 - वर्तमान समय की जनसंख्या
P_1 - पिछले वर्ष की जनसंख्या

Rajsarthi.in

→ जनसंख्या वृद्धि उस क्षेत्र की आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक विकास की सूचक होती है।

जनसंख्या वृद्धि के घटक -

1. जन्मदर - एक वर्ष में प्रति हजार व्यक्तियों में जितने जीवित बच्चों का जन्म

$$CBR = \frac{BI}{P} \times 1000$$

2. मृत्युदर - एक वर्ष में प्रति हजार व्यक्तियों में मरने वालों की संख्या

$$CDR = \frac{D}{P} \times 1000$$

3. प्रवास - एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में जाना

उद्गम स्थान — गंतव्य स्थान
उत्प्रवासी - — आप्रवासी +

प्राकृतिक वृद्धि -
जन्म - मृत्यु

वास्तविक वृद्धि -
जन्मदर - मृत्यु दर + आप्रवास - उत्प्रवास

प्रवास के कारण

प्रतिकर्ष कारक (Push) -
1. रहने की निम्न दशाएँ - गरीबी, बेरोजगारी, जल की कमी, शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधा की कमी।

Rajsathi.in

(2.) प्रतिकुल जलवायु
(3.) महामारियां
(4.) प्राकृतिक विपदाएं - बाढ़, सुखा, तुफान, भूकम्प
(5.) युद्ध, लड़ाई

अपकर्ष कारक (Pull) -

1. रहने की अच्छी सुविधाएँ रोजगार, अच्छा वेतन, शिक्षा व स्वास्थ्य,
2. अनुकूल जलवायु
3. मनोरंजन के साधन
4. शांत क्षेत्र
5.

Note - विगत 500 वर्षों में मानव जनसंख्या 10 गुना से अधिक बढ़ी है।
- अकेले 20 वीं शताब्दी में जनसंख्या 4 गुना बढ़ी
- प्रतिवर्ष लगभग 8 करोड़ लोग पहले की जनसंख्या में जुड़ जाते हैं।

थामस माल्थस का जनसंख्या सिद्धान्त (1798) - "जनसंख्या, खाद्य आपूर्ति की तुलना में तेजी से ~~इस~~ बढ़ेगी इसका परिणाम अकाल, महामारी व युद्ध के रूप में सामने आएगा और जनसंख्या वृद्धि अचानक से तेजी से गिर जाएगी।"

जनसंख्या नियंत्रण के उपाय -

1. परिवार नियोजन को अपनाकर बच्चों के जन्म को रोका जा सकता है या अन्तराल रखा जा सकता है।

Rajsathi.in

2. परिवार नियोजन को अपनाकर बच्चों को सुविधाओं से जनसंख्या वृद्धि को सीमित किया जा सकता है। इससे महिलाओं के स्वास्थ्य पर भी सुधार होगा
3. प्रचार - प्रसार से लोगों में जागरूकता बढ़ानी चाहिए।
4. बड़े परिवारों के लिए गर्भ निरोधक सामग्री उपलब्ध करवानी चाहिए।
5. देरी से विवाह करने को बढ़ावा देना चाहिए।

जनांकिकीय संक्रमण सिद्धान्त

उपयोगिता - किसी क्षेत्र की जनसंख्या का वर्णन तथा भविष्य की जनसंख्या का अनुमान लगाया जाता है।

जनांकिकीय संक्रमण सिद्धान्त की तीन अवस्थाएँ

I	II	III
ग्रामीण, कृषि, अशिक्षा	संक्रमण	शिक्षित, नगरीय, औद्योगिक
- उच्च जन्म दर	- उच्च जन्म दर	- निम्न जन्म दर
- उच्च मृत्यु दर	- निम्न / मध्यम मृत्यु दर	- निम्न मृत्यु दर
- धीमी वृद्धि दर	- उच्च वृद्धि दर	- स्थिर वृद्धि दर
↓ अविकसित देश	↓ विकासशील देश	↓ विकसित देश

Raisarthi.in

3. मानव विकास

→ वृद्धि व विकास :- समय के साथ परिवर्तन बताती है।

वृद्धि व विकास में अन्तर

वृद्धि	विकास
मात्रात्मक परिवर्तन	गुणात्मक परिवर्तन
1. मुल्य निरपेक्ष	1. मुल्य सापेक्ष
2. परिवर्तन ऋणात्मक	2. परिवर्तन सदैव
3. व धनात्मक दोनों हो सकते हैं।	3. धनात्मक होता है।

- पूर्व में किसी देश की विकास के स्तर को नापने का आधार केवल आर्थिक वृद्धि था।
- जिस देश की अर्थव्यवस्था जितनी बड़ी होती उसे उतना ही विकसित माना जाता था।
- ऐसी वृद्धि में लोगों के जीवन स्तर में सुधार नहीं आए फिर नए विचारों का जन्म हुआ जिसमें विकास का केन्द्र बिन्दु मानव को माना जाता है।

⇒ मानव विकास की अवधारणा

↳ डॉ. महबुब उल हक (1990) (जनक) → विकल्पों में वृद्धि

- अमर्त्य सेन (सहयोगी) → स्वतंत्रता में वृद्धि

↳ लोगों के जीवन में सुधार लाने के माध्यम

विकास के उद्देश्य - ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न करना है जिसमें लोग सार्थक जीवन बिता सके।

Rajsarthi.in

सार्थक जीवन - लम्बी आयु के साथ उद्देश्यपूर्ण जीवन जीना।

मानव विकास के महत्वपूर्ण पक्ष -

1. ज्ञान प्राप्त करना (शिक्षा)
2. लम्बा व स्वस्थ जीवन जीना (स्वास्थ्य)
3. पर्याप्त साधन होना (संसाधनों तक पंहुच / क्रयाशक्ति)

इन सभी पक्षों से मानव में क्षमताओं का निर्माण होगा और विकल्पों में वृद्धि होगी और अपनी क्षमताओं से विकल्पों का चुनाव कर सकेगा।

⇒ मानव विकास के स्तम्भ -

1. समता
2. सतत पोषणीयता
3. उत्पादकता
4. सशक्तीकरण

→ मानव विकास का विचार इन अवधारणाओं पर टिका हुआ है। तीनों क्षेत्रों की प्राप्ति का आधार है।

1. समता -

सभी लोगों की उपलब्ध अवसरों के लिए समान पहुंच की व्यवस्था करना।
अवसरों की उपलब्धता में जाति, धर्म व आय के आधार पर भेदभाव नहीं होना चाहिए। अगर भेदभाव होते हैं तो भेदभाव के कारणों का पता करें तथा निवारण करें।

2. सतत पोषणीयता -

अवसरों की उपलब्धता में निरंतरता।
प्रत्येक पिढ़ी की जिम्मेदारी है कि वो संसाधनों का इस तरह उपयोग करे की आने वाली पीढ़ी की भी समान

Rajsathi.in

अवसर मिले।
उदाहरण - लड़कियों को पढ़ाना चाहिए ताकि वे बड़े होने पर उनके विकल्प समाप्त न हो।

उत्पादकता -
लोगों की कार्य क्षमता को बढ़ाना किसी देश के लोग ही उसके वास्तविक धन होते है इसलिए अच्छी शिक्षा व स्वास्थ्य सुविधा से उनकी कार्यक्षमता बढ़ानी चाहिए

सशक्तिकरण -
अपने विकल्प चुनने की शक्ति प्राप्त क समता व स्वतंत्रता के बढ़ने से यह शक्ति आती है।
उदाहरण - सामाजिक व आर्थिक रूप से कमजोर लोगों के लिए सुशासन तथा लोककल्याणकारी नीतियों की आवश्यकता होती है।

=> मानव विकास के उपागम

आय उपागम	कल्याण उपागम
- सबसे पुराना	- मानव लाभार्थी मानता है
- आय में वृद्धि के साथ विकास में वृद्धि	- लोग विकास में भागीदारी नहीं
- अधिक आय से स्वतंत्रता बढ़ती है।	- शिक्षा, स्वास्थ्य आवास पर अधिक सरकारी खर्च पर जोर देता है।

Rajsarthi.in

Date.
Page. 15

आधारभूत उपागम
- यह उपागम ILO ने दिया।
- 6 आधारभूत आवश्यकताओं पर बल दिया -
(i) शिक्षा (ii) भोजन
(iii) स्वास्थ्य (iv) जलापूर्ति
(v) आवास (vi) स्वच्छता

क्षमता उपागम
- यह उपागम अमर्त्य सेन ने दिया।
- तीनों क्षेत्र में मानव क्षमता को बढ़ाना

I.L.O. - अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन

U.N.D.P. - United National Development Program

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम UNDP शिक्षा, स्वास्थ्य व संसाधनों तक पहुंच के आधार पर सदस्य देशों का स्कोर व रैंक जारी करता है।

मानव विकास का मापना -
↳ डॉ. महबूब उल हक (1990)

HDI - मानव विकास सुचकांक
1990 से undp द्वारा प्रतिवर्ष प्रकाशित की जाती है। HDI के स्कोर 0 से 1 के मध्य होता है। जिस देश का स्कोर 1 के जितने नजदीक होता है उसका विकास उतना ही अधिक माना जाता है।

HDI 2020 - (i) नार्वे (2) आयरलैंड (3) स्विटजरलैंड
भारत - 131 श्रीलंका - 73

HDI 2022 - (i) स्विटजरलैंड (2) नार्वे (3) आइसलैंड
भारत - 132 श्रीलंका 73

Pajsarthi.in

Date.
Page. 16

मानव के तीनों क्षेत्रों के मापन के सूचक

शिक्षा
- प्रौढ़ साक्षरता दर → पढ़ना लिखना जानने वालों की संख्या
- सकल नामांकन अनुपात → स्कूल में नामांकित बच्चों की संख्या

→ उस देश में शिक्षा की पंहुच का पता चलता है।

स्वास्थ्य
→ जन्म के समय जीवन प्रत्याशा
→ उच्चतर जीव प्रत्याशा लोगों के पास लम्बा व स्वस्थ जीवन जीने के ज्यादा अवसर हों।

संसाधनों तक पहुँच
→ क्रयशक्ति से मात्रा
आय से वस्तुओं व सेवाओं के उपयोग की मिलती है।

Rajsarthi.in

→ पहले इन तीनों की गणना अलग-2 की जाती है, इसमें प्रत्येक का हिस्सा एक तिहाई $\frac{1}{3}$ (33%) होता है।

→ HDI मानव विकास के प्राप्ति स्तर को मापता है। अर्थात सभी क्षेत्रों में हुई उपलब्धि बताता है।

★ HDI सर्वाधिक विश्वसनीय माप नहीं है क्योंकि यह सूचकांक वितरण के बारे में कोई जानकारी नहीं देता है।

→ UNDP द्वारा प्रयुक्त मानव विकास की मापन के दो सूचकांक है।

HDI	HPI
मानव विकास सुचकांक	मानव गरीबी सुचकांक
Human development Index	Human Poverty Index

इन दोनो से किसी देश की मानव विकास की स्थिति का सही पता चलता हैं।

HPI मानव विकास सुचकांक -
मानव विकास में कमी को मापता है।
(i) बिना आय वाला माप है।
(ii) कमी को मापने के आधार (सूचकांक)।
(iii) 40 वर्ष तक जीवित रहने वालों की संख्या।
(iv) कम भार वाले छोटे बच्चों की संख्या।
(v) स्वच्छ जल नहीं मिलने वालों की संख्या।
(vi) प्रौढ़ निरक्षरता व स्कूल बीच में छोड़ने वालों की संख्या।
(vii)

⇒ HDI और HPI के अलावा भी मानव विकास को मापने की नयी विधियाँ विकसित हो रही है।
जैसे :- राजनीतिक स्वतंत्रता सुचकांक (CPFI)
भ्रष्टाचार धारणा सुचकांक (CPI)

भ्रष्टाचार धारणा सुचकांक (CPI) 2022 -

सर्वाधिक भ्रष्ट देश - सोमालिया
सबसे कम भ्रष्ट देश - डेनमार्क

भारत का 180 देशों में से 80 वां स्थान है।

Rajsarthi.in

* भूटान विश्व का अकेला देश है जिसने सकल राष्ट्रीय प्रसन्नता (GNH) को देश की प्रगति का अधिकारिक माप घोषित किया है।

बिना प्रसन्नता के भौतिक प्रगति किसी काम की नहीं है।

मानव विकास की अन्तर्राष्ट्रीय तुलना-

देश के क्षेत्रफल पर प्रतिव्यक्ति आय का मानव विकास से सिधा सम्बन्ध नहीं है। मानव विकास में बड़े देशों की तुलना मे छोटे देश अच्छा काम कर रहे है। गरीब क्षेत्रों की रैंक आपसी पड़ोसी अमीर क्षेत्रों से ऊंची होती है/मिलती है।

छोटी अर्थव्यवस्था वाले त्रिनिडाड, टोबेगो जैसे देशों की HDI भारत से ऊँची है।
भारत में पुत्र कम प्रतिव्यक्ति आय के बाद भी केरल सर्वोच्च है।

HDI / HDR के आधार पर देशों को 4 समुह में बाटा

मानव विकास का स्तर	HDI स्कोर	HDR-2020 देशों की संख्या	HDR.
अति उच्च	0.800 +	66	66
उच्च	0.700 से 0.789	53	49
मध्यम	0.550 से 0.699	37	44
निम्न	0.549 से नीचे	38	32

Rajsarthi.in

अति उच्च व उच्च स्कोर के देश ज्यादातर यूरोप महाद्वीप में स्थित है।

- सामाजिक सेक्टर में अधिक खर्च
- राजनैतिक लड़ाई व अस्थिरता नहीं
- संसाधनों का वितरण लगभग समान

- द्वितीय विश्व युद्ध के बाद आजाद देश
- 1991 में सोवियत संघ से विघटित अलग देश
- लोककल्याणकारी नीतियों व सामाजिक भेदभाव को दूर करके स्कोर में सुधार कर रहे हैं।

- राजनैतिक लड़ाई, गृहयुद्ध, अकाल से पीड़ित देश
- सामाजिक सेक्टर की बजाय रक्षा पर अधिक खर्च
- अस्थिर सरकारों की वजह से आर्थिक विकास में कमी

Rajsarthi.in

4. आर्थिक क्रियाएं व प्राथमिक क्रियाएँ

संसाधनों को प्राप्त करना व उपभोग करना।

आर्थिक क्रियाएँ - मानव के वे कार्य जिनसे आय की प्राप्ति होती है, उन्हें आर्थिक क्रियाएँ कहते हैं।

आर्थिक क्रियाएँ

प्राथमिक आर्थिक क्रियाएँ	द्वितीय आर्थिक क्रियाएँ	तृतीयक आर्थिक क्रियाएँ	चतुर्थ आर्थिक क्रियाएँ	पंचम आर्थिक क्रियाएँ
- आखेट	- विनिर्माण	- सेवाएँ	- सुचना आधारित	- विशेषज्ञ
- भोजन संग्रह	- निर्माण उद्योग	- व्यापार	अनुसंधान	- निर्णयकता
- पशुपालन	- प्रसंस्करण उद्योग	- परिवहन	- विकास आधारित अनुसंधान	- नीति निर्धारक
- मत्स्यपालन		- संचार		- परामर्शदाता
- कृषि				
- खनन				
- वनों से लकड़ी काटना				

प्राथमिक क्रियाओं को निर्धारण करने वाले कारक

भौतिक कारक
- अवस्थिति
- जल
- भूमि
- जलवायु
- मृदा
- वनस्पति

सामाजिक कारक
- रीति रिवाज
- परम्पराएँ
- साक्षरता
- तकनीकी ज्ञान
- सरकारी नीतियाँ
- भूमि स्वामित्व

Rajsathi.in

आखेट, मछली पकड़ना व भोजन संग्रह प्राचीनतम ज्ञात आर्थिक क्रियाएँ हैं।

आखेट व भोजन संग्रहण -
1. विशेषताएँ:-

कठोर जलवायु क्षेत्र में होता है।
1. आदिम समाज के लोग करते हैं।
2. जीवन निर्वाह के लिए करते हैं।
3. भोजन, वस्त्र, निवास व घरेलू आवश्यकताओं के लिए करते हैं।
4. कम पुंजी व कम ज्ञान की आवश्यकता होती।
5. अतिरिक्त भोजन का संग्रहण नहीं करते है।
6. प्रतिव्यक्ति उत्पादन कम।
7. पत्थर तीर व लकड़ी के औजारों से शिकार करते हैं।
8. आधुनिक तरीके से शिकार करने पर जीव जन्तु लुप्त
9. या संकट में है।
10. भारत में 1972 में शिकार पर रोक लगाई गई।

व्यापार के लिए एकत्रीकरण (संग्रहण)
⇒ कीमती पौधों की पत्तियां, छाल, औषधिय पौधों की प्रोसेसिंग करके बाजार में बेचते है।

व्यापार के लिए पौधे के विभिन्न भागों का प्रयोग करते है जैसे -

छाल का प्रयोग - कुनैन बनाने में
पत्तियों का प्रयोग - पेय पदार्थ, दवाइयाँ, सौन्दर्य
रेशों का प्रयोग - कपड़ा बनाने में
फलों का प्रयोग - भोजन व तेल बनाने में

Raisathi.in

* चिकल चबाने वाला गोंद (चविंगम) जैपोता वृक्ष के दुध से बनता है।

⇒ विश्व स्तर पर भोजन संग्रहण का महत्व अधिक नहीं है क्योंकि भोजन संग्रहण से भोजन संग्रहण से प्राप्त उत्पाद महँगा पड़ता है।

⇒ बाजार में अब कृत्रिम उत्पाद मिल जाते हैं। जो अच्छी क्वालिटी (गुणवत्ता) व कम किमत वाले होते हैं।

2. पशुपालन

↓ (i) चलवासी पशुचारण
↓ (ii) वाणिज्य पशुचारण

(i) चलवासी पशुचारण -

(i) प्राचीन जीवन निर्वाह व्यवसाय है।
(ii) पशुचारक, पशुओं के साथ-2 एक स्थान से दुसरे स्थान पर घुमते है।
(iii) पानी व चारे की उपलब्धता व गुणवता के अनुसार गति करता है।
(iv) पशुचारक भोजन, वस्त्र, तम्बु बनाने व यातायात के लिए पशुओं पर निर्भर रहते हैं।
(v) पशुचारकों के अपने-2 निश्चित क्षेत्र हैं।
(vi) चलवासी पशुचारण क्षेत्र-
↳(i) युरेशिया टुण्ड्रा क्षेत्र
↳(ii) उत्तरी अफ्रीका के अंटलांटिक तट से अरब प्रायद्वीप

Rajsarthi.in

होता हुआ मंगोलिया व मध्य चीन तक।
दक्षिणी पश्चिमी अफ्रीका व मेडागास्कर द्वीप
↳(iii)

(vii) इन क्षेत्रों में कई प्रकार के पशु पाले जाते हैं -

1. आर्कटिक व उत्तरी ध्रुव - रेंडियर
2. तिब्बत व एंडीज पर्वत - याॅक, लामा
3. सहारा व एशिया मरुस्थल - भेड़, बकरी, ऊँट
4. उष्ण कटिबंधीय अफ्रीका - गाय, बैल

ऋतु प्रवास -
जब एक स्थान पर पशुओं के लिए चारा खत्म हो जाता है तो पशुचारक नई जगह की खोज में लम्बी दूरियाँ तय करते हैं, इसे ऋतु प्रवास कहते हैं। अर्थात इनका प्रवास ऋतु विशेष के अनुसार होता है।

उदाहरण -
हिमालय क्षेत्र में गुज्जर, बकरवाल, गद्दी, भूटिया के लोग

मैदान —गर्मी→ पर्वत
←सर्दी—

वर्तमान में चलवासी पशुचारकों की संख्या घट रही है जिसके निम्न कारण है -

- राजनीतिक सीमाओं का अधिरोपण होना।
- नई बस्तियाँ बनने के कारण।

Rajsarthi.in

Page. 24

(ii) वाणिज्यक पशुचारण

(i) यह अत्यधिक व्यवस्थित व पूँजी प्रधान व्यवसाय है।
(ii) इसमें बड़े क्षेत्र में फैले व्यवस्थित फार्म (रैंच) होते हैं।
(iii) सम्पूर्ण क्षेत्र (फार्म) को छोटे -2 भागों में बाँट दिया जाता है।
(iv) चराई को नियंत्रित करने के लिए इन्हें बाड़ लगाकर एक दूसरे से अलग किया जाता है।
(v) जब एक भाग में घास खत्म हो जाता है तो पशुओं को दूसरे भागों में ले जाया जाता है।
(vi) इसमें पशुओं की संख्या चारागाह के अनुसार रखी जाती है।
(vii) यह एक विशिष्ट गतिविधि है जिसमें एक ही प्रकार के पशु पाले जाते हैं।
(viii) इसमें पशुओं से मांस, खाल, ऊन, दुग्ध को वैज्ञानिक तरीके से प्रोसेस कर डिब्बा बन्द कर बाजारों में बेचा जाता है।
(ix) फार्म में पशुओं के प्रजनन, जैनेटिक सुधार बीमारियों पर नियंत्रण व उनके संरक्षण पर विशेष ध्यान दिया जाता है।
(x) प्रमुख क्षेत्र - अर्जेन्टिना, आस्ट्रेलिया, यूरुग्वे, न्युजीलैंड, USA,

3. कृषि

कृषि क्या है?

भूमि को जोतकर फसल उत्पन्न करना और पशुपालन करने की कला व विज्ञान को कृषि कहते हैं।

Rajsarthi.in

Date.
Page. 25

कृषि प्रणालियाँ

निर्वाह कृषि

↓ आदिम कालीन निर्वाह कृषि

↓ गहन निर्वाह कृषि

↓ चावल प्रधान गहन निर्वाह कृषि

↓ चावल रहित गहन निर्वाह कृषि

आदिमकालीन निर्वाह कृषि - कम जनसंख्या वाले क्षेत्र उष्ण कटिबंधीय

गहन निर्वाह कृषि - अधिक जनसंख्या वाले क्षेत्र पठार व मैदानी

आदिमकालीन निर्वाह कृषि

→ यह उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में कि जाती है (कर्क से मकर रेखा
→ यह आदिम जाति के लोग प्राकृतिक परिस्थितियों में कृषि करते है।
→ क्षेत्र - लैटिन अमेरिका, अफ्रीका, दक्षिण पूर्वी एशिया)

कर्तन व दहन कृषि (Slash and burn)
इन क्षेत्रों में वनस्पति को जलाकर उसकी राख को भूमि में दबा दिया जाता है। यह राख भूमि के उपजाऊपन को बढ़ाती है इसलिए इसे कर्तन व दहन

Rajsarthi.in

कृषि भी कहा जाता है।

स्थानान्तरित कृषि -

जब 4-5 वर्षों बाद मिट्टी का उपजाऊपन नष्ट हो जाता है तो किसान नए क्षेत्रों में वनों को जलाकर कृषि के लिए भूमि को तैयार करते हैं तथा उस पर कृषि करते हैं, इसे स्थानान्तरित कृषि कहते हैं।

आदिमकालीन निर्वाह कृषि की विशेषताएँ

- इस कृषि में केवल खाद्यान्न फसलों को उगाया जाता है।
- इस कृषि में किसान का सम्पूर्ण परिवार कृषि कार्य में लगा रहता है
- प्रति हैक्टेयर उत्पादन कम होता है।
- कोई विशेष पूंजी की लागत नहीं होती है।
- रसायनिक पदार्थों का प्रयोग नहीं किया जाता है।

समस्या -

इस कृषि की समस्या यह है कि उस क्षेत्र में भूमि का उपजाऊपन जल्दी-2 खत्म होने लगता है, जिसे झूम चक्र (आग लगाकर कृषि कार्य तैयार किया) होता हो जाता है।

उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में इसे अलग-2 नाम से जाना जाता है -

मध्य अमेरिका व मैक्सिको - मिल्पा
1. भारत व उत्तरी पूर्वी राज्यों में - झूमिंग
2. मलेशिया व इण्डोनेशिया - लदांग

Rajsathi.in

गहन निर्वाह कृषि -

इस प्रकार की कृषि मानसूनी एशिया के उन क्षेत्रों में कि जाती है जहां जनसंख्या अधिक है तथा कृषि जोतों का आकार छोटा है।

प्रमुख क्षेत्र - भारत, चीन, श्रीलंका, पाकिस्तान, इंडोनेशिया, कम्बोडिया, बांग्लादेश, कोरिया।

विशेषताएँ -

→ इसमें खाद्यान्न फसलों को स्थानीय उपयोग के लिए उगाया जाता है।
→ इस कृषि कार्य में किसान का सम्पूर्ण परिवार लगा रहता है।
→ इस कृषि में अधिक उत्पादन के लिए भूमि का गहन उपयोग किया जाता है। (एक वर्ष में अनेक फसलें ली जाती हैं)
→ इसमें मशीनों का उपयोग कम होता है और अधिकतर कार्य मानव श्रम से किए जाते हैं।
→ भूमि के उपजाऊपन को बढ़ाने के लिए पशुओं के गोबर खाद व हरी खाद का उपयोग किया जाता है।
→ इसमें प्रति हैक्टेयर उत्पादन अधिक तथा प्रति व्यक्ति उत्पादन कम होता है।
→ इस कृषि में पूंजी की लागत कम होती है।

गहन कृषि के दो प्रकार

↓ चावल रहित निर्वाह कृषि

↓ चावल प्रधान निर्वाह कृषि

Rajsarthi.in

Date.
Page. 28

चावल रहित गहन निर्वाह कृषि -

फसलें - गेहूँ, जौ, बाजरा, सोयाबीन, चारा

विशेषताएँ - (i) कम पानी व सिंचाई की कम व्यवस्था वाले क्षेत्रों में इस प्रकार की कृषि की जाती है।
(ii) क्योंकि मानसूनी एशिया के अनेक भागों में भौगोलिक भिन्नता के कारण चावल उत्पादन सम्भव नहीं है।

प्रमुख क्षेत्र -

1. उत्तरी चीन, उत्तरी कोरिया, उत्तरी जापान, मंचुरिया
2. भारत के सिंधु गंगा मैदान के पश्चिमी भाग
   फसल - गेहूं, जौ, गन्ना
3. भारत दक्षिणी व पश्चिमी शुष्क क्षेत्र
   फसल - बाजरा, कपास, ज्वार

विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि

क्षेत्र - यह कृषि अधिकतर मध्य अक्षांश के आंतरिक अर्द्धशुष्क प्रदेशों में घास के मैदानों में की जाती है। यहाँ कृषि योग्य विस्तृत क्षेत्र पाए जाते हैं।

Rajsarthi.in

घास के मैदानों के नाम

यूरेशिया - स्टेपीज
उत्तरी अमेरिका - प्रेयरीज
अर्जेन्टीना - पम्पाज / पम्पास
दक्षिणी अफ्रीका - वेल्डस
आस्ट्रेलिया - डाउन्स
न्यूजीलैंड - केंटरबरी

फसलें
प्रमुख - गेहूँ
अन्य - मक्का, राई, जई, जौ

विशेषताएँ -

- उर्वरकों का उपयोग कम होता है।
- एक ही फसल की प्रधानता होने के कारण, फसल का परिवर्तन नहीं किया जाता है।
- सिंचाई भी सामान्यतः नहीं कि जाती, फसलें वर्षा के भरोसे होती हैं।
- इस कृषि में खेतों का आकार बहुत बड़ा होता है।
- खेत जोतने से फसल काटने तक सभी कार्य मशीनों से किया जाता है।
- इसमें प्रति हेक्टेयर उत्पादन कम होता है तथा प्रति व्यक्ति उत्पादन अधिक होता है।
- क्योंकि वहाँ जनसंख्या कम है इसलिए भूमि से अधिक उत्पादन करने पर कम ध्यान दिया जाता है।
- यहाँ कृषि उत्पादों को भण्डार करके रखा जाता है तथा अधिक माँग होने पर बेचा जाता है।

Rajsarthi.in

रोपण कृषि

औपनिवेशीकरण के दौरान यह कृषि यूरोपीय लोगों की देन है यह बड़े स्तर पर लाभ कमाने पर आधारित है।
यूरोपीय लोगों ने अपने अधीन उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में चाय, कॉफी, कोको, रबड़, गन्ना, ताड़ (पाम), केले व अनानास के बगान लगाए।

विशेषताएँ -

1. इसके कृषि क्षेत्र का आकार बहुत बड़ा होता है।
2. इसमें अधिक पूँजी निवेश, उच्च प्रबंधन व तकनीकि आधार पर वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग किया जाता है।
3. इस कृषि में किसी एक फसल के उत्पादन पर ध्यान दिया जाता है। यह एक फसली कृषि है।
4. यहाँ श्रमिक सस्ते मिलते हैं।
5. विकसित यातायात के कारण फैक्ट्री व बाजार आसानी से जुड़े रहते हैं।
6. अनुकूल भौगोलिक दशाओं के कारण ढ़ालों का उपयोग चाय बगानों हेतु किया जाता है।
7. ★ ब्राजील में कॉफी के बड़े बागानों को फेजेण्डा कहा जाता है।
8. वर्तमान में अधिकतर बागानों का स्वामित्व देशों की सरकार व नागरिकों के नियंत्रण में है।

Rajsarthi.in

विभिन्न देशों में लगायी जाने वाली रोपण फसलें व्यापारिक बागान

संस्थापक यूरोपीय लोग	बागान	भौगोलिक क्षेत्र
- यूरोप	कॉफी (फेजेण्डा)	ब्राजील
- फ्रांस	कॉफी, कोको	पश्चिमी अफ्रीका
- ब्रिटेन	चाय	भारत, श्रीलंका
- ब्रिटेन	गन्ना, केला	पश्चिमी द्वीप समूह
- ब्रिटेन	रबड़	मलेशिया
- स्पेन	नारियल, गन्ना	फिलीपीन्स
- हॉलेण्ड	गन्ना	इंडोनेशिया

मिश्रित कृषि

विश्व के अत्यधिक विकसित क्षेत्रों में - उत्तरी अमेरिका का पूर्वी भाग, उत्तरी-पश्चिमी यूरोप, यूरेशिया के कुछ भाग, दक्षिणी महाद्वीपों के समशीतोष्ण अक्षांश वाले भाग।

विशेषताएँ -

- इस कृषि में खेतों का आकार मध्यम होता है।
- बोई जाने वाली प्रमुख फसलें - गेहुं, जौ, राई, जई, मक्का चारे की फसल व सब्जियाँ प्रमुख है।
- चारे की फसल मिश्रित कृषि की प्रमुख घटक है।
- फसल उत्पादन व पशुपालन दोनों समान महत्व दिया जाता है।
- फसलों के साथ-2 पशुओं जैसे - मवेशी पालन, भेड़, सुअर, मुर्गीपालन आदि आय के प्रमुख स्त्रोत है।
- मृदा के उपजाऊपन को बनाए रखने के लिए शस्यावर्तन

Rajsathi.in

फसल चक्र व अंतः फसली कृषि को अपनाया जाता है,
- विकसित कृषि यंत्र व इमारतों पर अधिक पूंजी व्यय होती है
- भूमि के गहन उपयोग के लिए रासायनिक व हरि खाद का उपयोग किया जाता है।
- किसानों की कुशलता व योग्यता अधिक चाहिए

डेयरी कृषि

क्षेत्र व विशेषताएँ -

→ यह दुग्ध देने वाले पशुओं के पालन पोषण का सबसे उन्नत प्रकार है।
- इसमें पशुओं के छप्पार (शैड), चारा रखने के भंडार व दुग्ध निकालने के लिए मशीन पर अधिक धन खर्च किया जाता है। अर्थात इसमें पूंजी की अधिक आवश्यकता होती है।
- पशुओं के स्वास्थ्य, प्रजनन व पशुचिकित्सा पर भी अधिक ध्यान दिया जाता है।
- इसमें गहन श्रम की आवश्यकता होती है।
- पशुओं को चराने, दुग्ध निकालने के कार्यों में वर्षभर कठिन मेहनत की आवश्यकता होती है।
- क्योंकि फसलों की तरह इनमें भी कोई अन्तराल नहीं होता, जिसमें श्रम की आवश्यकता न हो।
- वर्तमान में विकसित यातायात के साधन रेफ्रीजिरेटर पाश्चुरीकरण की सुविधाओं के कारण विभिन्न डेयरी उत्पादों को अधिक समय तक रखा जाता है।
- डेयरी का कार्य नगरीय व औद्योगिक केन्द्रों के समीप किया जाता है और जल्दी क्योंकि ये क्षेत्र दुग्ध व डेयरी उत्पादों के अच्छे बाजार हैं।

Raisathi.in

पाश्चुरीकरण -
यह एक ऐसी तकनीक है, जिसमें भोज्य पदार्थ को निश्चित तापमान पर गर्म किया जाता है और जल्दी से ठण्डा कर दिया जाता है जिसके फलस्वरूप उसमें उपस्थित सूक्ष्म जीवाणु नष्ट हो जाते हैं।

क्षेत्र -
सबसे बड़ा क्षेत्र उत्तर पश्चिमी यूरोप का क्षेत्र
1. कनाडा
2. न्युजीलैंड, दक्षिणी - पूर्वी आस्ट्रेलिया, तस्मानिया
3.

भूमध्य सागरीय कृषि

- भूमध्य सागरीय कृषि अति विशिष्ट प्रकार की कृषि है।
- इसमें खट्टे फलों की कृषि की जाती है।

विस्तार - भूमध्यसागरीय के समीपवर्ती क्षेत्र जो दक्षिणी यूरोप से उत्तरी अफ्रीका में ट्युनेशिया से अंटलांतिक तट तक।
दक्षिण के कैलिफोर्निया, मध्यवर्ती चिली, दक्षिणी अफ्रीका का दक्षिणी पश्चिमी भाग पर एवं आस्ट्रेलिया के दक्षिण पश्चिम भाग

- अंगुर, अंजीर व जैतून की कृषि भूमध्य सागरीय क्षेत्र की प्रमुख विशेषता है।
- इस क्षेत्र में अच्छे किस्म के अंगुरों से शराब बनाई जाती है तथा घटिया किस्म के अंगुरों से किशमिश व मुनक्का बनाया जाता है।
- शीत ऋतु में जब युरोप व USA में खट्टे फलों व सब्जियों की मांग होती है तब इस क्षेत्र से सप्लाई की जाती है। यह इस कृषि का प्रमुख लाभ है।

Raisathi.in

बाजार के लिए सब्जी खेती व उद्यान कृषि

- इस प्रकार की कृषि में अधिक मुद्रा मिलने वाली फसलों जैसे- सब्जियाँ, फल व फूल लगाए जाते है जिनकी मांग नगरीय क्षेत्र में होती है।
- इस कृषि में खेतों का आकार छोटा होता है तथा खेत अच्छे यातायात साधनों के द्वारा नगरों से जुड़े रहते है। जहाँ ऊँची आय वाले लोग रहते है।
- इसमें गहन, श्रम व पूँजी की आवश्यकता होती है।
- इसमें सिंचाई, उर्वरक, अच्छी किस्म के बीज, कीटनाशी हरित ग्रह व ठण्डे क्षेत्रों में कृत्रिम ताप का भी उपयोग होता है।
- इस प्रकार की उत्तरी पश्चिमी यूरोप, के दक्षिण पूर्वी भाग एवं भूमध्य सागरीय प्रदेश USA में की जाती है। जहाँ औद्योगिक क्षेत्रों में जनसंख्या घनत्व अधिक है।

☆ नीदरलैंड (हॉलैंड) पुष्प उत्पादन व बागवानी फसल विशेषकर ट्यूलिप (एक प्रकार का पुष्प) में विशेष स्थान रखता है।

ट्रक कृषि

जिन क्षेत्रों में किसान केवल सब्जी उगाता है वहाँ उसे ट्रक कृषि कहते है।

- इसमें एक ट्रक रातभर सब्जी के खेतों एवं बाजार के मध्य की दुरी तय करता है। इसी आधार पर इसका नाम ट्रक कृषि है।

- नगरों में बढ़ती सब्जियों की मांग के कारण इस कृषि का तेजी से विकास हो रहा है।

RaSarthi.in

कारखाना कृषि

पश्चिमी यूरोप व उत्तरी अमेरीका के औद्योगिक क्षेत्रों में उद्यान कृषि से अलग कारखाना कृषि भी की जाती है।
- इसमें पशुधन पाला जाता है इसमें विशेषकर गाय, बैल व मुर्गीपालन होते हैं।
- इन्हें बाड़े में रखा जाता है तथा कारखानों में बने भोजन को खिलाया जाता है।
- इनको बिमारियों से बचाने पर विशेष ध्यान दिया जाता है।
- इनमें भवन निर्माण, कई कामों के लिए मशिनों, प्रकाश व ताप की व्यवस्था करने एवं पशु चिकित्सा के लिए अधिक पूँजी की आवश्यकता होती है।
- अच्छी नस्ल का चुनाव और प्रजनन की वैज्ञानिक विधियाँ मुर्गीपालन व पशुधन पालन के महत्वपूर्ण लक्षण है।

किसानों के संगठन के आधार पर अपना अधिकार व उस पर कृषि के प्रकारों का वर्गीकरण किया गया है ये किसानों के संगठन खेती करने में मददगार होते है ये संघटन किसानों का खेतों पर अपना अधिकार व उस पर सरकारी नीतियों से प्रभावित होता है।

संगठन के आधार पर कृषि दो प्रकार की होती है-
1. सहकारी कृषि
2. सामुहिक कृषि

सहकारी कृषि-
1. जब किसानों का एक समुह अपनी कृषि से अधिक लाभ कमाने के लिए अपनी इच्छा से एक सहकारी संस्था बनाकर कृषि कार्य करते है, तो उसे सहकारी कृषि कहते है।
- इसमें व्यक्तिगत खेत बरकरार रहते हुए सहकारी रूप से खेती की जाती है।

Rajsarthi.in

→ सहकारी संस्था किसानों की सभी रूप से सहायता करती है जैसे - कृषि कार्य से जुड़ी सभी चीजें खरीदना, फसलों को उचित मुल्यों पर बेचना, सस्ती दरों पर प्रोसेसिंग साधनों को उपलब्ध करना।

→ सहकारी आन्दोलन एक शताब्दी पूर्व प्रारम्भ हुआ था। पश्चिमी यूरोप के डेनमार्क, नीदरलैंड, बेल्जियम, स्वीडन, इटली में यह सफलता पूर्वक चला।

☆ सबसे अधिक सफलता इसे डेनमार्क में मिली जहाँ प्रत्येक किसान इसका सदस्य है।

2. सामूहिक कृषि

→ इस प्रकार की कृषि का आधारभूत सिद्धान्त यह होता है, कि इसमें उत्पादन के साधनों का स्वामित्व सम्पूर्ण समाज एवं सामुहिक श्रम पर आधारित होता है।

→ कृषि का यह प्रकार पूर्व सोवियत संघ में विकसित हुआ,

→ उद्देश्य – कृषि करने के पुराने तरीके को बदलना एवं उत्पादन में वृद्धि तथा आत्मनिर्भरता प्राप्त करना।

→ इस सामुहिक कृषि को सोवियत संघ में कोलखहोज के नाम से जाना जाता है।

→ इसमें सभी किसान कृषि अपने संसाधन जैसे - भूमि पशुधन, श्रम को मिलाकर करते है।

→ वे अपनी दैनिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए भूमि का एक छोटा भाग अपने अधिकार में भी रखते है।

Rajsathi.in

खनन

★ पृथ्वी के गर्भ में धातुओं, अयस्कों, औद्योगिक तथा अन्य उपयोगी खनिजों को बाहर निकलना खनन कहलाता है

⇒ खनन कार्य को प्रभावित करने वाले कारक -

1. भौतिक कारक -
इसमें खनिजों के आकार, जमाव, श्रेणी ग्रेड एवं उपस्थिती की अवस्था शामिल करते हैं।

2. आर्थिक कारक -
इसमें खनिजों की मांग, तकनीकी ज्ञान एवं उसका उपयोग अवसंरचना के विकास के लिए उपलब्ध पूँजी व यातायात व श्रम पर होने वाला खर्च आता है।

खनन की विधियाँ

उपस्थिति की अवस्था व अयस्क की प्रकृति के आधार पर खनन के दो प्रकार हैं।

1. धरातलीय खनन
2. भूमिगत खनन

1. धरातलीय खनन -
इसे विवृत / खुला खनन भी कहा जाता है।
- यह खनीजों का सबसे सस्ता व आसान तरीका है, क्योंकि
- यह धरातल के करीब किया जाता है,
और इस विधि में धरातल के करीब किया जाता है इस विधि मे सुरक्षात्मक उपायों एवं उपकरणों पर अतिरिक्त

Rajsarthi.in

Date.
Page. 38

खर्च बहुत कम होता है एवं उत्पादन जल्दी व अधिक होता है।

भूमिगत खनन -
जब खनन धरातल के नीचे गहराई में होता है तब इसे भूमिगत / कुपकी खनन कहते हैं।
इस विधि से लम्बवत कुएं गहराई तक स्थित होते हैं
→ जहाँ से भूमिगत गैलरियाँ खनिजों तक पहुँचने के लिए फैली होती हैं।
→ इन मार्गों से धरातल तक खनिजों को निकालने एवं परिवहन का कार्य किया जाता है।
→ खदान में कार्य करने वाले श्रमिकों तथा निकाले जाने वाले खनिजों के सुरक्षित प्रभावी आगमन हेतु इसे विशेष प्रकार की लिफ्ट, ड्रिल्स, माल ढोने की गाड़िया तथा वायु संचार प्रणाली की आवश्यकता होती है।

⇒ विकसित अर्थव्यवस्था वाले देश उत्पादन की खनन, प्रसंस्करण एवं शोधन कार्य से पीछे हट रहे हैं क्योंकि लागत अधिक है।
→ जबकि विकासशील देश अपनी श्रमिक शक्ति के बल पर खनन कार्य को महत्व दे रहे हैं।

☆ अफ्रीका के कई देश, दक्षिण अमेरिका के कुछ देश एवं एशिया 50% आमदनी खनिजों से प्राप्त करता है।

Paisathi.in

5. द्वितीयक क्रियाएँ

विनिर्माण से आशय - हाथ से या मशीनों द्वारा उत्पन्न करना है।

सुई से लेकर, जलयान, वायुयान एवं अंतरिक्ष्यान का निर्माण आदि कार्य इसमें शामिल है।

विनिर्माण की सभी प्रक्रियाओं में कुछ सामान्य विशेषताएँ है जैसे -

शक्ति का उपयोग
1. एक ही प्रकार की वस्तुओं का विशाल उत्पादन
2. उत्पादन मशीनों या पुराने साधनों से
3. विशिष्टीकरण व श्रम विभाजन
4.

आधुनिक बड़े पैमाने पर होने वाले विनिर्माण की विशेषताएँ -

1. **कौशल का विशिष्टीकरण** (Specialization of Skills) -
बड़े पैमाने के उद्योगों में एक ही प्रकार की वस्तुओं का उत्पादन बड़े स्तर पर किया जाता है जिससे लागत कम आती है और सस्ता पड़ता है। जबकि छोटे पैमाने के उद्योगों में आर्डर मिलने पर ही वस्तुएँ बनाई जाती है जिससे लागत अधिक आती है।

2. **यंत्रीकरण** -
बड़े पैमाने पर किसी काम के पूरा करने के लिए मशीनों का प्रयोग किया गया जाता है जिसे यंत्रीकरण कहते है, आजकल यह कार्य स्वचालित मशीनों से किया जाता है

Rajsarthi.in

जिसे कम्प्युटर द्वारा बंद लूप फीडबैक सिस्टम (सेंसर) की सहायता से नियत्रिंत किया जाता है।

3. प्रौद्योगिक नवाचार -

आज के वैज्ञानिक युग में शोध एवं अनुसंधानों के कारण विनिमाण के क्षेत्र में लगातार नये परिवर्तन किए जाते है। विनिमाण की गुणवत्ता को नियंत्रित करने, अपशिष्टों को हटाने एवं अदक्षता के समाप्त करने तथा प्रदुषण का मुकाबला करने के लिए नई तकनीकों का प्रयोग आवश्यक हो जाता है।

4. संगठनात्मक ढाँचा एवं स्तरीकरण -

आधुनिक बड़े पैमाने पर विनिमाण के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए कुशल संगठन से इसमें करना आवश्यक है। यह कार्य निम्न कारणों से महत्त्वपूर्ण है।

1. यह एक जटील मशीनी तकनीक है। प्रभावी संगठन से इसमें नए सुधार लाए जा सकते है।
2. संगठन का निर्माण विशिष्टीकरण एवं श्रम विभाजन के आधार पर किया जाता है। इसमें कर्मचारियों की कार्यक्षमता बढ़ती है। कम प्रयास व अल्प लागत से अधिक माल का उत्पादन होता है।
3. इसमें अधिक पूँजी का निवेश होता है। इसलिए प्रभावी नियंत्रण आवश्यक होता है।
4. एक बड़ा संगठन प्रत्येक व्यक्ति के लिए निश्चित कार्य स्थान व साधनों की व्यवस्था करता है जिससे कार्य व्यवस्थित रूप से चलता है।

Rajsarthi.in

5. संगठन के लिए सभी, प्रशासकीय अधिकारियों व कर्मचारियों के मध्य उचित समन्वय स्थापित होना जरूरी होता है।

अनियमित भौगोलिक वितरण -

→ बड़े पैमाने वाले उद्योग उस स्थान पर लगाए जाते हैं जहाँ लागत कम आती है और लाभ अधिक होता है।

→ इस कारण विश्व के कुल स्थलीय भाग के 10% से कम भाग पर इनका विस्तार मिलता है।

→ इन उद्योगों में लोगों को बड़ी मात्रा में रोजगार मिलता है। बड़े स्तर पर उत्पादन से उस देश का आर्थिक विकास होता है और राजनीतिक शक्ति और राजनीतिक शक्ति का केन्द्र बन जाता है।
(जैसे USA, चीन, जापान, दक्षिणी कोरिया आदि)

→ विश्व में विनिर्माण स्थल कृषि की अपेक्षा बहुत छोटे क्षेत्रों में संकेन्द्रित है।

उद्योगों की स्थिति को प्रभावित करने वाले कारक

1. कच्चा माल
2. समूहन अर्थव्यवस्था
3. बाजार
4. श्रम
5. शक्ति
6. परिवहन एवं संचार
7. सरकारी नीति
8. पूंजी
9. जलापूर्ति
10. प्रौद्योगिकी

1. कच्चा माल (Raw Material) -

→ उद्योग के लिए कच्चा माल अपेक्षाकृत सस्ता एवं सरलता से परिवहन योग्य होना चाहिए।

Rajsathi.in

→ भारी वज़न वाला कच्चा माल जिसका वज़न उत्पादन क्रिया में कम हो जाता है, पर आधारित उद्योग उस कच्चे माल के प्राप्ति स्थल के निकट स्थापित किए जाते हैं। जैसे- इस्पात, चीनी एवं सीमेंट उद्योग।

→ जो कच्ची सामग्री जल्दी नष्ट होने वाली होती है उस पर आधारित उद्योग भी उसके प्राप्ति स्थल के निकट स्थापित किए जाते हैं। जैसे - कृषि प्रसंस्करण व डेयरी उत्पाद उद्योग

2. समूहन अर्थव्यवस्था (Agglomeration Economies)

→ प्रधान उद्योग की समीपता से अन्य अनेक उद्योग लाभान्वित होते हैं। ये लाभ समूहन अर्थव्यवस्था के रूप में जाने जाते हैं।

→ विभिन्न उद्योगों के मध्य पाई जाने वाली श्रृंखला से बचत की प्राप्ति होती है।

स्वच्छंद उद्योग (Foot Loose Industries)

→ ये उद्योग व्यापक विविधता वाले स्थानों में स्थित हैं।

→ यह किसी विशेष कच्चे माल जिनके भार में कमी हो रही है अथवा नहीं, पर निर्भर नहीं करते।

→ यह उद्योग संघटक पुरजों पर निर्भर रहते हैं जो कहीं से भी प्राप्त किए जा सकते हैं।

→ इसमें उत्पादन कम मात्रा में होता है।

→ इसमें श्रमिकों की भी कम आवश्यकता होती है।

→ ये उद्योग प्रदूषण नहीं फैलाते हैं।

→ इनकी स्थापना में परिवहन की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। जैसे - घड़ी उद्योग, आभूषण उद्योग, सॉफ्टवेयर उद्योग

Rajsarthi.in

3. बाजार (Market) -

→ उद्योगों की स्थापना में सबसे प्रमुख कारक उसके द्वारा उत्पादित माल के लिए उपलब्ध बाजार का होना है।

→ बाजार से तात्पर्य उस क्षेत्र में तैयार वस्तुओं की मांग एवं वहां के निवासियों में खरीदने की क्षमता है।

→ दूरस्थ क्षेत्र जहाँ कम जनसंख्या निवास करती है, छोटे बाजार होते हैं।

→ यूरोप, उत्तरी अमेरिका, आस्ट्रेलिया, जापान के क्षेत्र बड़े वैश्विक बाजार है क्योंकि इन क्षेत्रों में लोगों की क्रय शक्ति अधिक

→ दक्षिणी व दक्षिणी पूर्वी एशिया के घने बसे प्रदेश भी बड़ा बाजार उपलब्ध कराते हैं।

→ वायुयान निर्माण एवं शस्त्र निर्माण उद्योग भी ग्लोबल मार्केट है।

4. शक्ति के संसाधन -

→ वे उद्योग जिनमें अधिक शक्ति की आवश्यकता होती है वे ऊर्जा के स्त्रोतों के समीप लगाए जाते हैं। जैसे - उद्योग

→ प्राचीन समय में कोयला प्रमुख शक्ति का संसाधन था। पर आजकल जल विद्युत एवं खनिज भी कई उद्योगों के लिए शक्ति का महत्वपूर्ण साधन है।

5. श्रम (Labour) -

→ किसी भी उद्योग में श्रमिकों का होना अनिवार्य है।

→ उद्योगों में उत्पादन के स्तर, श्रम और मशीन के अनुसार श्रमिकों की संख्या में पर्याप्त भिन्नता मिलती है।

→ जिस उद्योग में उत्पादन मुख्यत: श्रमिकों की कुशलता पर आधारित होता है, उसमें अधिक श्रम की आवश्यकता पड़ती है।

→ बड़े पैमाने पर स्वचालित मशीनों का प्रयोग करने वाले

Raisarthi.in

उद्योगों में अपेक्षाकृत कम श्रमिकों की आवश्यकता होती है।

6. परिवहन एवं संचार

⇒ कच्चे माल को कारखाने तक लाने के लिए और तैयार माल को बाजार तक पहुँचाने के लिए विकसित परिवहन सुविधाएं औद्योगिक विकास के लिए आवश्यक हैं।

⇒ पश्चिमी यूरोप एवं उत्तरी अमेरिका के पूर्वी भागों में अत्यधिक परिवहन तंत्र विकसित होने के कारण सदैव इन क्षेत्रों में उद्योगों का संकेन्द्रण हुआ है।

⇒ उद्योगों हेतु सूचनाओं के आदान-प्रदान एवं प्रबन्धन के लिए संचार की भी महत्वपूर्ण आवश्यकता होती है।

7. सरकारी नीति (Government Policy)

⇒ उद्योगों की स्थापना पर सरकारी नीति का प्रभाव प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में पाया जाता है।

- संतुलित आर्थिक विकास हेतु सरकार प्रादेशिक नीति अपनाती है जिसके अन्तर्गत विशिष्ट क्षेत्रों में कर में छूट देकर उद्योगों की स्थापना की जाती है।
- सरकार किसी क्षेत्र में उद्योगों के संकेन्द्रीकरण को रोकने के लिए कर में वृद्धि करके उन्हें हतोत्साहित किया जाता है।

आकार के आधार पर

1. पूंजी निवेश 2. श्रमिकों की संख्या 3. उत्पादन की मात्रा

कुटीर उद्योग — छोटे पैमाने के उद्योग — बड़े पैमाने के उद्योग

Raisarthi.in

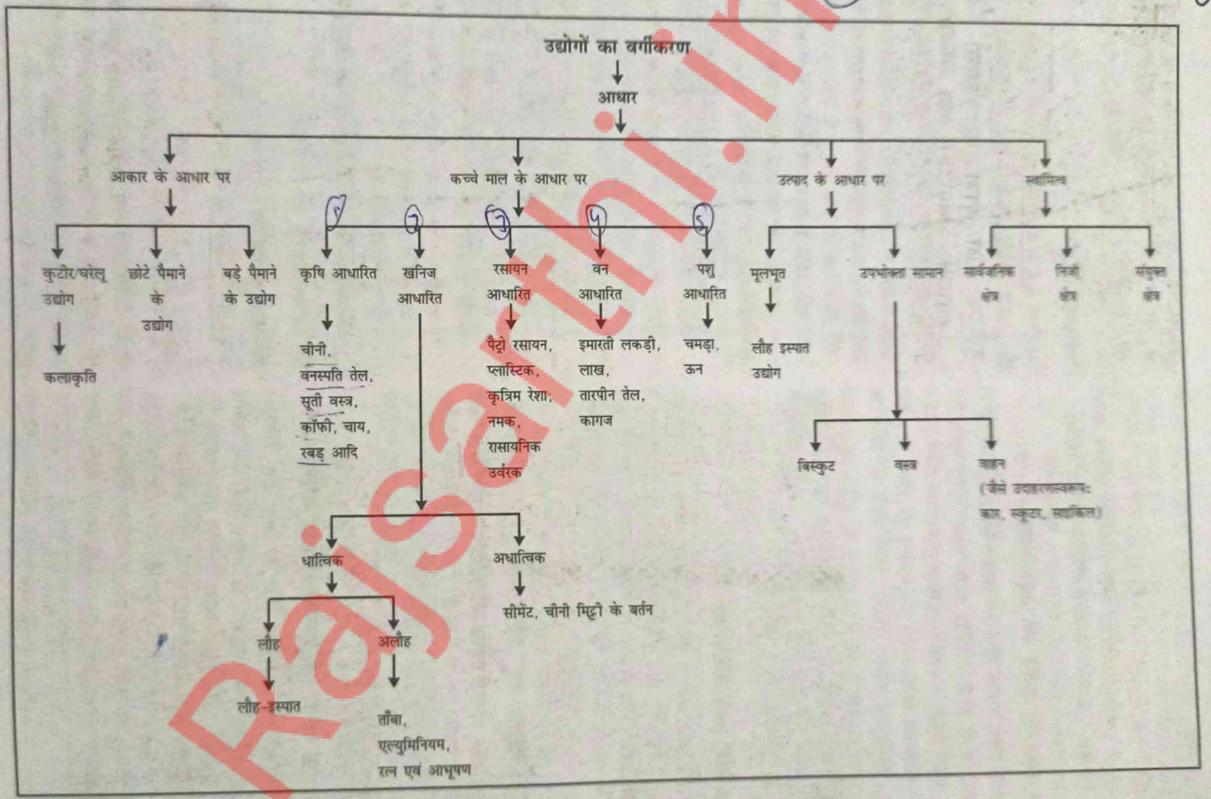

चित्र 5.1 : उद्योगों का वर्गीकरण

Rajsathi.in

(A) आकार पर आधारित उद्योग-

1. घरेलू या कुटिर उद्योग-

- यह निर्माण की सबसे छोटी इकाई है।
- परिवार के सभी सदस्य मिलकर अपने दैनिक जीवन के उपभोग का वस्तुएँ बनाते है।
- शिल्पकार स्थानीय कच्चे माल का या तो वे स्वयं उपयोग करते है या इसे स्थानीय गांव के बजार में विक्रय कर देते है। कभी ये अपने उत्पादो की अदला-बदली भी करते है।
- पूँजी व मशीन एवं परिवहन इन उद्योगों को अधिक प्रभावित नहीं करते है क्योंकि इनके द्वारा निर्मित वस्तुओं का व्यापारिक महत्व कम होता है एवं अधिकतर उपकरण स्थानीय लोगों द्वारा निर्मित होते है।
- इन उद्योगों की प्रमुख क्रियाएं- खाद्य पदार्थ, कपड़ा, चटाइयाँ, बर्तन, औजार, फर्नीचर, जूते, खिलौने, रस्सी, आभूषण, मिट्टी के बर्तन एवं मूर्तियाँ बनाना है।

2. छोटे पैमाने के उद्योग-

- इसके उत्पादन की तकनीक एवं निर्माण स्थल दोनों कुटीर उद्योग से भिन्न होते है।
- इसमें अर्द्धकुशल श्रमिक व शक्ति के साधनों से चलने वाले यंत्रों का प्रयोग किया जाता है।
- रोजगार के अवसर इन उद्योग में अधिक होते है जिससे स्थानीय निवासियों की क्रय शक्ति बढ़ती है।
- भारत, पाकिस्तान, चीन, इंडोनेशिया एवं ब्राजील जैसे विकासशील देशों में वहा की सरकारे अपनी जनसंख्या को रोजगार उपलब्ध करवाने के लिए इस प्रकार के छोटे पैमाने के उद्योगों

Rajsathi.in

Date.
Page. 47

को बढ़ावा देती है।

3. बड़े पैमाने के उद्योग-

- बड़े पैमाने के उद्योग के लिए विशाल बाजार, विभिन्न प्रकार का कच्चा माल, शक्ति के साधन कुशल श्रमिक, विकसित प्रौद्योगिकी, अधिक उत्पादन एवं अधिक पूँजी की आवश्यकता होती है।
- पहले यह उद्योग ग्रेट ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरिका के पूर्वी भाग एवं यूरोप में लगाए गए थे परन्तु वर्तमान में इनका विस्तार विश्व के सभी भागों में हो गया है।

⇒ विश्व के प्रमुख औद्योगिक प्रदेशों को उनके बड़े पैमाने पर किए गए निर्माण के आधार पर दो बड़े समूहों में बांटा जाता है-

1. परम्परागत औद्योगिक प्रदेश- विकसित प्रदेशों में इनका विस्तार अधिक है, जैसे इस्पात उद्योग, सूती वस्त्र उद्योग, रसायन उद्योग, मोटरगाड़ी उद्योग, चीनी उद्योग, तेलशोधन उद्योग।

2. उच्च प्रौद्योगिकी वाले बड़े औद्योगिक प्रदेश - विकसित देशों में इनका विस्तार कम है।

उच्च प्रौद्योगिकी उद्योग की संकल्पना

- उच्च प्रौद्योगिकी पर आधारित उद्योग नवीनतम पीढ़ी के उद्योग है।
- इसमें शोध एवं अनुसंधान पर आधारित नई तकनीकों का प्रयोग किया जाता है।
- इसमें उच्च स्तर सफेद कालर श्रमिकों की संख्या नीले

कॉलर श्रमिकों से अधिक होती है।

- उच्च प्रौद्योगिकी उद्योग में रोबोट, कम्प्यूटर एडेड डिजाइन (CAD) तथा निर्माण, धातु पिघलने एवं शोधन के इलेक्ट्रोनिक नियंत्रण एवं नए रासायनिक व औषधीय उत्पाद प्रमुख स्थान रखते है।
- इस प्रकार के उद्योग में आधुनिक साफ-सुथरे कार्यालय एवं प्रयोगशालाएँ देखने को मिलती है।
- उच्च प्रौद्योगिकी उद्योग जो प्रादेशिक संकेन्द्रित है आत्मनिर्भर एवं उच्च विशिष्टता लिए होते है उन्हें प्रौद्योगिक ध्रुव कहा जाता है।

- अमेरिका में सेन फ्रांसिस-को के समीप सिलीकन घाटी एवं सियटल के समीप सिलीकन वन तथा भारत में बैंगलूरु प्रौद्योगिक ध्रुव के अच्छे उदा॰ है।

(B) कच्चे माल पर आधारित उद्योग -

(क) कृषि आधारित

- खेतों से प्राप्त उपज का प्रयोग कच्चे माल के रूप में तैयार माल को ग्रामीण एवं नगरीय बाजारों में बेचा जाता है।
- प्रमुख कृषि आधारित उद्योग - भोजन प्रसंस्करण उद्योग शक्कर, आचार, मसाले, तेल व वस्त्र, पेय पदार्थ (चाय व कॉफी) तथा रबड़ उद्योग आते है।
- भोजन प्रसंस्करण में खाने में मलाई का उत्पादन डिब्बा भोजन, फलों से भोजन तैयार करना तथा मिठाइयाँ सम्मिलित कि जाती है।
- खाने की चीजों को सुरक्षित रखने के लिए कई विधियाँ काम में ली जाती है।

* कृषि व्यापार -

कृषि व्यापार एक प्रकार की व्यापारिक कृषि है जो औद्योगिक पैमाने पर की जाती है इसका वित्त पोषण प्रायः वह व्यापार करता है जिसकी मुख्य रुचि कृषि के बाहर हो। जैसे - चाय के बागान लगाना. कृषि व्यापार फार्म से आकार में बड़े, यंत्रीकृत, रसायनों पर निर्भर एवं अच्छी संरचना वाले होते हैं। इनको कृषि कारखाने भी कहा जाता है।

(ख) खनिज आधारित उद्योग -

→ इन उद्योगों में खनिजों को कच्चे माल के रूप मे उपयोग किया जाता है।

→ कुछ उद्योग लौह अंश वाले धात्विक खनिजों का उपयोग करते हैं जैसे कि लौह इस्पात उद्योग

→ जबकि कुछ अलौह धात्विक खनिजों का प्रयोग करते है जैसे एलुमिनियम, तांबा व ज्वैलरी उद्योग

→ सीमेंट, मिट्टी के बर्तन आदि उद्योगों में अधात्विक खनिजों का प्रयोग होता है।

(ग) रसायन आधारित उद्योग -

इस प्रकार के उद्योगों में प्राकृतिक रूप में पाए जाने वाले रासायनिक खनिजों का उपयोग होता है।
पेट्रो रसायन उद्योग में खनिज तेल का उपयोग होता है।
नमक, गंधक एवं पोटाश उद्योगों में भी प्राकृतिक खनिजों को काम में लेते हैं।
कुछ रासायनिक उद्योग लकड़ी व कोयले से प्राप्त कच्चे माल पर भी निर्भर हैं।
रसायन उद्योग के अन्य उदाहरण कृत्रिम रेशे बनाना, प्लास्टिक

Raisahi.in

निर्माण इत्यादि है।

(घ) वनों पर आधारित उद्योग -

→ वनों से प्राप्त उपज कच्चे माल के रूप में इन उद्योगों में प्रयुक्त होती है।
→ फर्नीचर उद्योग के लिए इमारती लकड़ी, कागज उद्योग के लिए लकड़ी, बांस एवं घास तथा लाख उद्योग के लिए लाख वनों से ही प्राप्त होती है।

(ङ) पशु आधारित उद्योग -

→ चमड़ा व ऊन पशुओं से प्राप्त प्रमुख कच्चा माल है।
→ चमड़ा उद्योग के लिए चमड़ा व ऊनी उद्योग के लिए ऊन पशुओं से ही प्राप्त की जाती है।

(C) उत्पादन आधारित उद्योग

(क) आधारभूत उद्योग -

वे उद्योग जिनके उत्पाद को अन्य वस्तुएँ बनाने के लिए कच्चे माल के रूप में प्रयोग में लाया जाता है। उन्हें आधारभूत उद्योग कहते हैं।
जैसे - लौह इस्पात उद्योग

लौह इस्पात → वस्त्र उद्योग के लिए मशीन → उपभोक्ता उपयोग हेतु कपड़ा

Rajsarthi.in

(ख) उपभोक्ता सामान -

→ इसमें ऐसी वस्तुओं को शामिल किया जाता है जिनका उपयोग प्रत्यक्ष रूप से आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किया जाता है।

→ जैसे - ब्रेड एवं बिस्कुट, चाय, साबुन, लिखने के कागज टेलीविजन, खिलौने, घड़ी, साइकिल आदि

→ इन उद्योगों को उपभोक्ता माल बनाने वाले अथवा गैर आधारभूत उद्योग कहा जाता है।

(D) स्वामित्व के आधार पर उद्योग -

(क) सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योग	(ख) निजी क्षेत्र के उद्योग	(ग) संयुक्त क्षेत्र के उद्योग
→ ये उद्योग सरकारी एजेंसियों द्वारा प्रबंधित तथा सरकार के अधीन होते हैं।	इन उद्योगों में एक व्यक्ति का स्वामित्व होता है।	इन उद्योगों का संचालन संयुक्त कंपनी के द्वारा या किसी निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र की कम्पनी के संयुक्त प्रयास द्वारा किया जाता है।
→ भारत व समाजवादी देशों में बहुत से उद्योग सार्वजनिक क्षेत्र के अधीन हैं।	निजी संगठनों द्वारा भी संचालित होते हैं। पूँजीवादी देशों में अधिकतर उद्योग निजी क्षेत्र में हैं।	जैसे - ऑयल इंडिया लिमिटेड
→ जैसे - BHEL तथा स्टील ऑथोरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड आदि।	जैसे - विस्को, डाबर ग्रुप, रिलायंस ग्रुप आदि	

Raisahi.in

6. तृतीयक और चतुर्थ क्रियाकलाप

तृतीयक क्रियाकलाप

उत्पादन
↓
प्रत्यक्ष सेवाएँ
↓
पारिश्रमिक / वेतन
व्यवसायिक / अमूर्त उत्पादन

विनिमय
↓
व्यापार
परिवहन
संचार
⇒ दूरी का प्रभाव खत्म करती है।

निम्न स्तरीय
↓
शारीरिक श्रम → कम वेतन
⇓
व्यक्तिगत सेवाएँ असंगठित

उच्च स्तरीय
↓
मानसिक श्रम → अधिक वेतन
⇓
व्यवसायिक सेवाएँ संगठित
सरकार / कम्पनी द्वारा

पर्यटन (Tourism) - पर्यटन एक यात्रा है जो व्यापार की बजाय मनोरंजन या आनन्द के उद्देश्यों के लिए की जाती है।

पर्यटक प्रदेश

- भूमध्यसागरीय तट के चारों ओर गर्म स्थान तथा भारत का पश्चिमी तट विश्व के लोकप्रिय पर्यटक स्थानों में से है।
- अन्य क्षेत्रों में पर्वतीय क्षेत्रों में शीतकालीन खेल प्रदेश राष्ट्रीय उद्यान, स्मारक, विरासत स्थल और ऐतिहासिक नगर भी पर्यटकों को आकर्षित करता है।

Date. |
Page. | 53

पर्यटन का महत्त्व -

→ कुल पंजीकृत रोजगारों तथा कुल राजस्व (सकल घरेलू उत्पाद का 40%) की दृष्टि से यह विश्व का क्षेत्र अकेला सबसे बड़ा (25 करोड़) तृतीयक क्रियाकलाप है।

→ पर्यटकों के आवास, भोजन, परिवहन, मनोरंजन तथा विशेष दुकानों जैसी सेवा उपलब्ध कराने के लिए अनेक स्थानीय व्यक्तियों को रोजगार मिलता है।

→ पर्यटन, अवसंरचना उद्योगों, फुटकर व्यापार तथा शिल्प उद्योगों को प्रोत्साहित करता है।

→ कुछ प्रदेशों में पर्यटन ऋतुनिष्ठ होता है जबकि कई प्रदेशों वर्षभर पर्यटकों को आकर्षित है।

पर्यटन आकर्षण को प्रभावित करने वाले कारक -

जलवायु -

- कुछ ठण्डे क्षेत्रों के लोग अवकाश में गर्म व धुपदार मौसम वाले जगह जाना पसंद करते हैं। इस कारण यूरोप के लोग सर्दियों में दक्षिणी यूरोप और भूमध्य सागरीय क्षेत्रों में जाना पसंद करते हैं, क्योंकि वहाँ उच्च तापमान धुप की लम्बी अवधि तथा निम्न वर्षा की दशाएँ होती हैं। इस प्रकार जलवायु की विविधता पर्यटकों को आकर्षित करती है।

भू - दृश्य -

कुछ लोग ऐसे क्षेत्रों में छुट्टियाँ बिताना पसंद करते हैं जहाँ का पर्यावरण आकर्षक होता है, जैसे - पर्वत, झीलें, झरने, घाटियाँ आदि।

Rajsathi.in

उदाहरण के लिए भारत में लद्दाख क्षेत्र ट्रेकिंग में रूचि रखने वाले पर्यटकों को आकर्षित करता है।

3. इतिहास एवं कला -
किसी क्षेत्र के इतिहास और कला में संभावित आकर्षण होता है। लोग प्राचीन और सुन्दर नगरों, पुरातत्व स्थानों पर जाते हैं और किलों, गिरिजाघरों, महलों आदि को देखकर आनन्द उठाते है।

4. संस्कृति और अर्थव्यवस्था -
किसी क्षेत्र के रीति रिवाज और परम्पराओं में संभावित आकर्षण होता है।
यदि कोई क्षेत्र पर्यटकों की जरूरतों को सस्ते दामों पर पूरा करता है तो वह अत्यन्त लोकप्रिय हो जाता है।
भारत में 'घरों' में रूकना एक लाभदायक व्यापार बनकर उभरा है जैसे कि गोवा में हेरीटेज होम्स तथा कर्नाटक में मेडीकेरे तथा कूर्ग।

★ चिकित्सा पर्यटन - जब चिकित्सा उपचार को अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन गतिविधि से जोड़ दिया जाता है तो इसे सामान्यत चिकित्सा पर्यटन कहा जाता है।

भारत में समुद्र पार रोगियों के लिए स्वास्थ्य सेवाएँ-

2005 में USA से उपचार के लिए 55,000 रोगी भारत आए।
भारत चिकित्सा पर्यटन में विश्व में अग्रणी देश बनकर उभरा है। यहाँ के महानगरों में विश्वस्तरीय...

Rajsarthi.in

संपूर्ण विश्व के रोगियों का उपचार करते है।
भारत, थाइलैंड, सिंगापुर और मलेशिया जैसे विकासशील देशों मे चिकित्सा पर्यटन से अनेक लाभ प्राप्त हुए है।
भारत, स्विटजरलैंड और आस्ट्रेलिया के अस्पताल विशिष्ट चिकित्सा सुविधाओं की उपलब्ध करवा रहा है। जैसे MRI, रेडियोलॉजी इमेज, अल्ट्रासाउंड टेस्ट आदि।
चिकित्सा पर्यटन के अतिरिक्त मेडिकल टेस्ट और आँकड़ो के विश्लेषण में बाह्य स्त्रोत का भी उपयोग किया जाता है। इसमें सस्ती मेडिकल सुविधाएँ मिल जाती है।

तृतीयक क्रियाकलापों के प्रकार·
व्यापार, परिवहन, संचार और सेवाएँ कुछ तृतीयक क्रियाकलाप है।

व्यापार और वाणिज्य-
↳ वस्तुओं की खरीदना व बेचना।
↳ मुख्य उद्देश्य - लाभ कमाना।

व्यापारिक केन्द्र ( )

ग्रामीण विपणन केन्द्र नगरीय विपणन केन्द्र

व्यापार की प्रकृति के अनुसार

थोक व्यापार खुदरा / फुटकर व्यापार

Rajsathi.in

ग्रामीण विपणन केन्द्र -

ये ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित होते है।
→ यहाँ व्यक्तिगत और व्यावसायिक सेवाएं सुविकसित नहीं होती
→ ये स्थानीय संग्रहण व वितरण केन्द्र होते है।
→ यहां अर्द्ध नगरीय केन्द्र होते है जो ग्रामीण - लोगों को
→ अधिक मांग वाली वस्तुओं और सेवाओं को उपलब्ध करवा देते है।

☆ ग्रामीण क्षेत्रों में जहां दैनिक बाजार नहीं होते है वहाँ आवश्यकता के अनुसार साप्ताहिक, पाक्षिक या मासिक बाजार होते है जिन्हें हाट / आवधिक बाजार कहते है।

→ ये बाजार निश्चित तिथि को लगते है, क्षेत्र के लोग अपनी जरूरतों की चीजों को खरीदते है।
→ ये बाजार एक स्थान से दुसरे स्थान पर लगते रहते है दुकानदार इस प्रकार सभी दिन व्यस्त रहते है और विस्तृत क्षेत्र को सेवा प्रदान करते है।

नगरीय विपणन केन्द्र

→ ये नगरों और महानगरों में साधारण के साथ-2 विशिष्ट वस्तुओं और सेवाओं को उपलब्ध कराते है।
→ सामान्यत: ये स्थाई दैनिक बाजार होते है।
→ यहां विनिर्मित वस्तुओं के साथ-2 औद्योगिक और व्यवसायिक सेवाएं भी उपलब्ध होती है। जैसे - वकील, शिक्षक डॉक्टर, परामर्शदाता, बैंक आदि।

Rajsarthi.in

Date.
Page. 57

थोक व्यापार -

→ यहाँ बड़ी मात्रा में वस्तुओं का व्यापार किया जाता है।
→ थोक व्यापारी सीधे विनिर्माताओं से वस्तु खरीदते है या फिर बिचौलिये की सहायता से खरीदते है।
→ ये अपनी वस्तुओं को सीधे उपभोक्ता को न बेचकर फुटकर व्यापारियों को बेचते है
→ थोक विक्रेता फुटकर भण्डारों को उधार देते है।
→ एक प्रकार से फुटकर विक्रेता, थोक विक्रेता की पूंजी पर ही अपना कार्य करते है।

फुटकर व्यापार -

→ यहाँ छोटी मात्रा में वस्तुओं का व्यापार होता है
→ यहाँ वस्तुओं को सीधे उपभोक्ताओं के पास भेजा जाता है।
→ यहाँ कार्य निश्चित दुकानों व स्टोरो में सम्पन्न होता है
→ फेरी, रेहड़ी, ट्रक, द्वार से द्वार, डाक आदेश, दूरभाष तथा इंटरनेट फुटकर बिक्री के भंडार रहित उदाहरण है।

फुटकर बिक्री से जुड़े भंडार के प्रकार -

उपभोक्ता सहकारी भंडार

फुटकर व्यापार में बड़े स्तर पर सबसे पहले नवाचार उपभोक्ता सहकारी समुदाय लाया था।
ये लोग सीधे विनिर्माता या थोक विक्रेता से माल खरीदकर उपभोक्ताओं को उचित मुल्य पर बेचते है।

Raisathi.in

दुकान से बेचना
1. भण्डार रहित बिक्रि
2. भण्डार सहित बिक्री
3.
↳ (i) उपभोक्ता सहकारी भंडार
↳ (ii) विभागीय भंडार
↳ (iii) श्रृंखला भंडार

2. विभागीय भंडार -
यह एक बड़ी दुकान होती है जिसमें विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ एक स्थान पर उपलब्ध हो जाती है
यहाँ विभिन्न कम्पनियों की चीजें बेची जाती है।
इन विभागीय भण्डारों का नियंत्रण एक प्रबंधन सिस्टम द्वारा किया जाता है।
ये स्तोर थोक, खुदरा बिक्री दोनों रूपों में काम करते है।

श्रृंखला भण्डार -
यह भण्डार चलाने के अनुभवों को अन्य भण्डार पर लागु करके अनेक जगह अपने व्यापारिक मॉल चलाना श्रृंखला भण्डार कहलाता है।
ये अपने कार्यों के लिए कुशल विशेषज्ञ रखते है
ये अपने निर्देश पर ही सीधे वस्तुओं का विनिर्माण करा देते है।
यहाँ से सस्ती दर पर व्यापारी माल खरीदते है।

परिवहन (Transport) -
परिवहन एक ऐसी सेवा अथवा सुविधा है जिससे व्यक्तियों या वस्तुओं को एक स्थान पर ले जाया जाता है।

Rajsarthi.in

यह मनुष्य की गतिशीलता की आवश्यकता को पूरा करने वाला संगठित उद्योग है।

आधुनिक समाज वस्तुओं के उत्पादन, वितरण और उपभोग में सहायता देने के लिए तीव्र और सक्षम परिवहन व्यवस्था चाहते हैं। इस जटिल व्यवस्था की प्रत्येक अवस्था में परिवहन द्वारा पदार्थ का मूल्य अत्यधिक बढ़ जाता है इसलिए परिवहन साधन का चयन निम्न आधारों पर किया जाता है-

1. परिवहन दूरी
2. परिवहन समय
3. परिवहन लागत
4.

1. परिवहन दूरी -
मार्ग लम्बाई की वास्तविक दूरी को परिवहन दूरी कहा जाता है। जो किमी. में होती है। किसी वस्तु के परिवहन का खर्च दूरी के अनुसार बढ़ता है।

2. परिवहन समय -
दूरी अथवा एक मार्ग पर यात्रा करने में लगने वाला समय।

3. परिवहन लागत -
किसी वस्तु को एक स्थान से दूसरे स्थान तक भेजने में जितना खर्च आता है उसे परिवहन लागत कहते हैं।
जल परिवहन सबसे सस्ता साधन है।
दूसरे स्थान पर स्थल परिवहन तथा तीसरे स्थान पर वायु परिवहन आता है।
वायु परिवहन सबसे महंगा साधन माना जाता है।

Rajsarthi.in

☆ जाल तंत्र (Network)- विकसित परिवहन व्यवस्था से विभिन्न स्थान आपस में जुड़कर जाल तंत्र का निर्माण करते है जाल तंत्र, नोड तथा योजक से मिलकर बनते हैं। एक विकसित जाल तंत्र में अनेक योजक होते है।

☆ नोड -
यह एक बिन्दु होता है जो दो या अधिक मार्गों का संधि स्थल एक उदगम बिन्दु, एक गंतव्य बिन्दु अथवा मार्ग के सहारे कोई बड़ा कस्बा होता है।

☆ योजक -
प्रत्येक सड़क जो दो नोडो को जोड़ती है योजक कहलाता है।

परिवहन को प्रभावित करने वाले कारक.

1. मांग -
परिवहन की मांग जनसंख्या के आकार से प्रभावित होती है। जनसंख्या का आकार जितना बड़ा होगा परिवहन की मांग उतनी ही अधिक होगी।

2. मार्ग.
नगरों, कस्बों, गाँवो, औद्योगिक केन्द्रों और उनके मध्य व्यापार के पैटर्न, उनके मध्य भू-दृश्य की प्रकृति जलवायु के प्रकार और मार्ग का लम्बाई पर आने वाले खर्च पर परिवहन के मार्ग निर्भर करते है।

Rajsarthi.in

3. संचार-

संचार सेवाओं में शब्दों और संदेशों, तथ्यों और विचार का आदान-प्रदान शामिल है।

परिवहन के सबसे रूपों को संचार पथ कहा जाता है।

→ जहाँ परिवहन नेटवर्क विकसित होता है वहाँ संचार का फैलाव आसान होता है।

→ मोबाइल, टेलीफोन और उपग्रहों के विकास ने संचार को परिवहन से मुक्त कर दिया है।

4. दूरसंचार -

टेलीफोन, मोबाइल दूरसंचार की आधुनिक तकनीक है इनसे तेजी से सूचनाएँ भेजी जाती है।

⇒ जनसंचार-

रेडियो और टेलीविजन ने समाचारों, चित्रों द्वारा और टेलीफोन कॉल्स ने दुनिया के अधिक लोगों तक सूचनाओं को पहुँचाते है, इसलिए इन्हें जनसंचार माध्यम कहा जाता है।

वे विज्ञापन और मनोरंजन के लिए भी महत्वपूर्ण है।

उपग्रह संचार, पृथ्वी और अंतरिक्ष से सूचना का प्रसारण करता है।

इंटरनेट ने वैश्वीकरण संचार तंत्र में क्रांति ला दी है।

Rajasthan.in

Date.
Page. 62

द्वितीयक क्रियाकलाप	तृतीयक क्रियाकलाप
1. इसमें मूर्त वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है	1. इसमें मूर्त वस्तुओं का उत्पादन नहीं होता है, बल्कि सेवाओं का व्यवसायिक उत्पादन शामिल होता है।
2. इसमें उत्पादन के मात्रा व गुणवत्ता से मापा जाता है।	2. इसे पारिश्रमिक व वेतन से मापा जाता है।
3. इसमें उत्पादन तकनीकी मशीनरी व फैक्ट्री प्रक्रियाओं पर निर्भर होता है।	3. इससे उत्पादन विशेष कुशलताओं, अनुभव एवं ज्ञान पर निर्भर होता है।
4. इसमें विनिर्माण, निर्माण व प्रसंस्करण क्रियाएँ शामिल है।	4. इसमें परिवहन, व्यापार और सेवाएं शामिल हैं।

चतुर्थ क्रियाकलाप (Quatarnary Activities)-

प्रमुख विशेषताएँ-

इसमें ज्ञान आधारित अप्रत्यक्ष सेवाएँ शामिल होती है।
यह सूचना और अनुसंधान एवं विकास पर आधारित है।
विकसित अर्थव्यवस्थाओं में ज्यादा लोग ज्ञान के इस क्षेत्र में कार्य करते हैं।
ये सेवाएँ संसाधनों से बंधी हुई नहीं होती है।
इन सेवाओं का बाजार के नजदीक होना आवश्यकता नहीं है।
कार्यालय भवनों, शिक्षण संस्थानों, अस्पतालों व डाक्टरों के कार्यालयों, लेखाकार्य और दलालों की फर्मों में काम करने वाले कर्मचारी इस वर्ग की सेवाओं से संबंध रखते हैं।

Rajsarthi.in

Date.
Page. 63

पंचम क्रियाकलाप (Quinary Activities)

- प्रमुख विशेषताएँ-
- उच्चतम स्तर के निर्णय लेने तथा नीतियों का निर्माण करने वाले पंचम क्रियाकलाप को निभाते हैं।
- पंचम क्रियाकलाप को निभाते हैं। वे सेवाएं हैं जो नवीन एवं वर्तमान विचारों की रचना उनके पुनर्गठन और व्याख्या आंकड़ों की व्याख्या और प्रयोग तथा नई प्रौद्योगिकी के मुल्यांकन पर केंद्रित होती हैं।
- प्राय: स्वर्ण कॉलर कहे जाने वाले ये व्यवसायक तृतीयक सेक्टर के एक और उपविभाग है जिसमें विषय विशेषज्ञ, निर्णयकर्ता, परामर्शदाता व नीति निर्धारक लोगों को शामिल किया जाता है।
- विकसित अर्थव्यवस्थाओं में उनका महत्व उनकी संख्या से अधिक होता है।

बाह्यस्त्रोतन (आऊट सोर्सिंग) → अपतटन (ऑफ शोरिंग)

अपने ही देश में बाहरी एजेंसियों को काम करने ठेके पर देना। — बाह्यस्त्रोत दूसरे देशों में करवाया जाता है।

⇓

उद्देश्य - 1. दक्षता सुधारना
2. लागत घटाना

↓

क्षेत्र - उन देश में जहाँ सस्ता व कुशल श्रम हो।

↓

प्रमुख लाभ - रोजगार में वृद्धि प्रवास में कमी

↓

हानि - स्थानीय विरोध क्योंकि उनका रोजगार छिन्न

Rajsarthi.in

Page. 64

आऊट सोर्सिंग उद्योग (आधार)

1. व्यवसाय प्रक्रिया बाह्यस्त्रोतन (BPO) -
   ↳ विनिर्माण, इंजिनियरिंग, कस्टमर केयर, कॉल सेन्टर।

2. ज्ञान प्रक्रिया बाह्यस्त्रोतन (KPO) -
   ↳ R&D, ई लर्निंग, कानूनी प्रोफेशन, बैंकिंग सेक्टर

3. होम शोरिंग (work form home)
   ↳ सूचना तकनीकी से घर बैठे कार्य करना
   डाटा प्रोसेसिंग

⇒ बाह्यस्त्रोतन (outsourcing)

किसी बाहरी एजेन्सी को काम ठेके पर देना बाह्यस्त्रोतन कहलाता है।

i. दक्षता को सुधारना ii) लागत को घटाना

जब बाह्यस्त्रोतन का कार्य समुद्रपार के देशों से कराया जाता है तो इसको अपतट (ऑफशोरिंग) कहा जाता है।

→ यद्यपि दोनों अपतरन और बाह्यस्त्रोतन का प्रयोग इकट्ठा किया जाता है।

→ जिन व्यापारिक क्रियाकलापों को बाह्यस्त्रोतन किया जाता है इनमें सूचना प्रौद्योगिकी, मानव संसाधन, ग्राहक और काल सेन्टर सेवाएँ और कई बार विनिर्माण तथा इंजिनियरिंग भी सम्मिलित की जाती है।

Rajsarthi.in

→ आंकड़ा प्रक्रमण सूचना प्रौद्योगिकी से संबंधित एक सेवा है जिसे आसानी से एशियाई, पूर्वी यूरोपीय और अफ्रीकी देशों में क्रियान्वित किया जा सकता है।

→ इन देशों में विकसित देशों की अपेक्षा कम पारितोषिक पर अंग्रेजी भाषा में अच्छी निपुणता वाले सूचना प्रौद्योगिकी में कुशल कर्मचारी उपलब्ध हो जाता है।

→ अतः हैदराबाद अथवा मनीला में स्थापित एक कम्पनि भौगोलिक सूचना तंत्र की तकनीक पर आधारित परियोजना पर संयुक्त राज्य अमेरिका अथवा जापान जैसे देशों के लिए काम करती है।

⇒ बाह्यस्त्रोतन के परिणामस्वरूप भारत, चीन, पूर्वी यूरोप, इजराइल, फिलीपींस कोस्टारिका में बड़ी संख्या में काल सेंटर है। खुले हैं। इससे इन देशों में नए काम उत्पन्न हुए हैं।

→ बाह्यस्त्रोतन वाले देश अपने यहाँ काम की तलाश कर रहे युवकों का विरोध झेल रहे हैं।

→ बाह्यस्त्रोतन उन देशों में आ रहा है जहाँ सस्ता व कुशल श्रम उपलब्ध है। ये उत्प्रवास वाले देश भी हैं। बाह्यस्त्रोत के द्वारा काम करने उपलब्ध होने पर इन देशों में प्रवास कम हो जाता है।

→ बाह्यस्त्रोतन के बने रहने का मुख्य कारण तुलनात्मक लाभ है।

→ पंचम सेवाओं की नवीन प्रवृत्तियों में ज्ञान प्रक्रमण बाह्यस्त्रोतन और होम शौरिंग है, जो बाह्यस्त्रोतन का विकल्प है।

→ ज्ञान प्रक्रमण बाह्यस्त्रोतन उद्योग, व्यवसाय प्रक्रमण बाह्यस्त्रोतन है से भिन्न है, क्योंकि इसमें उच्च कुशलकर्मी शामिल होते हैं। यह सूचना प्रेरित ज्ञान की बाह्यस्त्रोतन है।

→ ज्ञान प्रक्रमण बाह्यस्त्रोतन के उदाहरणों में अनुसंधान और विकास क्रियाएँ, ई-लर्निंग, व्यवसाय अनुसंधान, बौद्धिक सम्पदा अनुसंधान और बैंकिंग सैक्टर आते हैं।

Rajsathi.in

Date.
Page. 66

अंकीय विभाजन -

- सूचना और प्रौद्योगिकी (ICT) पर आधारित विकास के अवसरों का वितरण संचार पूरे विश्व मे आसमान है। विभिन्न देशों में राजनीतिक, आर्थिक व सामाजिक भिन्नताएँ पाई जाती है।
कोई देश कितनी जल्दी से अपनी जनता को सूचना और संचार प्रौद्योगिकी की सुविधा देता है और उसके लाभ उपलब्ध करवाता है उसी को अंकीय विभाजन कहते है।
- विकसित देश इसमें आगे है जबकि विकासशील देश पिछड़े हुए है।
- भारत अथवा रूस जैसे बड़े देश में गाँवों की तुलना में शहरों में यह सुविधा बेहतर है।

Rajsatti.in

7. परिवहन एवं संचार

उत्पादन केन्द्र (उद्योग) — परिवहन / संचार / व्यापार — उपभोक्ता केन्द्र (बाजार)

परिवहन के साधन
- स्थल
  - सड़क
  - रेलवे
  - पाइपलाइन
- जल
  - अंत: स्थलीय
  - सागरीय व महासागरीय मार्ग
- वायु
  - राष्ट्रीय
  - अन्तर्राष्ट्रीय

⇒ परिवहन -

परिवहन एक संगठित उद्योग है।

(i) समाज की आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।

(ii) परिवहन के लिए गाड़ियों तथा मार्गों के रख रखाव के लिए कई संस्थाएं हैं।

(iii) प्रत्येक देश ने अपनी सुरक्षा के लिए विभिन्न प्रकार से परिवहन का विकास किया है।

(iv) अच्छी संचार व्यवस्था व तीव्रगामी परिवहन व्यवस्था लोगों के बीच सहयोग व एकता को बढ़ाती है।

(A) स्थल परिवहन (Land Transport)

1. अधिकांश वस्तुओं व सेवाओं का परिवहन स्थल मार्ग से होता है।
2. आरम्भिक दिनों में मानव स्वयं वाहक था।
3. बाद के वर्षों में पशुओं (खच्चरों, घोड़ों, ऊंटों) का प्रयोग

Raisarthi.in

बोझा ढोने के लिए किया जाने लगा।
4 पहिए के आविष्कार के साथ गाड़ियों और माल डिब्बों का प्रयोग महत्वपूर्ण हो गया।
5. परिवहन में क्रान्ति 18वीं शताब्दि में भाप के इंजन के आविष्कार के बाद आई।
6. प्रथम सार्वजनिक रेलमार्ग 1825 में उत्तरी इंग्लैंड के स्टॉकटन और डार्लिंग्टन स्थानों के मध्य प्रारम्भ हुआ। उसके बाद से ही रेलमार्ग 19वीं शताब्दी में परिवहन के सर्वाधिक लोकप्रिय और तीव्रतम प्रकार बन गए।
7. स्वचालित इंजन के आविष्कार ने सड़कों की गुणवत्ता और उन पर चलने वाले वाहनों (कार, ट्रक इत्यादि) के सन्दर्भ में सड़क परिवहन में क्रांति ला दी।
8. स्थल परिवहन के अन्तर्गत नवीनतम विकास के रूप में पाइपलाइनों, रोपमार्गों तथा तारमार्गों को रखा जाता है।
9. रेलमार्ग, समुद्रीपोत, नौकाएँ, ट्रक, पाइपलाइन बड़े मालवाहक हैं।
10. सामान्यतः मानव कुली, बोझा ढोने वाले पशु, गाड़ियां अथवा माल डिब्बे जैसे पुराने और प्रारम्भिक रूप परिवहन के सर्वाधिक खर्चीले साधन हैं जबकि बड़े मालवाही सस्ते पड़ते हैं।

बोझा ढोने वाले पशु

1. घोड़े - भारवाही पशुओं के रूप में
2. कुत्ते व रेंडियर - हिमाच्छादित मैदानों में स्लेज खींचने में
3. खच्चर - पर्वतीय प्रदेशों में
4. ऊँटों का प्रयोग मरुस्थलीय क्षेत्रों में
5. भारत में बैलों का प्रयोग छकड़ों को खींचने में

Rajsarthi.in

1.1. सड़क परिवहन (Road transport) (सड़के कच्ची व पक्की)

=> सकारात्मक पक्ष

- छोटी दूरियों के लिए सस्ता परिवहन का साधन।
- सड़कों द्वारा माल का परिवहन सस्ता होता जा रहा है। क्योंकि इसके द्वारा घर-2 वस्तुओं को पहुचाया जा सकता है।
- सड़के देश के व्यापार व वाणिज्य को विकसित करने में सहायक हैं।
- पर्यटन को बढ़ाने में सहायक है।

=> नाकारात्मक पक्ष -

- निर्माण व रख-रखाव पर भारी खर्च
- सड़क तंत्र विकसित न हो तो यातायात संकुलता (जाम) समस्या।

यातायात प्रवाह (Traffic Flow)

- जब सड़क तंत्र यातायात की जरूरतों के अनुसार विकसित न हो तो सड़क पर संकुलन (जाम) बढ़ जाता है।
- यातायात के शीर्ष (उच्च बिन्दु) और गर्त (निम्न बिन्दु) सड़कों पर दिन के विशेष समय पर ट्रैफिक जाम देखे जा सकते हैं।
- इससे मोटर चालकों और यात्रियों का समय बर्बाद होता है व्यापार में हानी या लाभ या अन्य व्यक्तिगत नुकसान होते हैं पर्यावरण प्रदुषण बढ़ता है।

Paisathi.in

Date.
Page. 70

⇒ नगरीय परिवहन समाधान -

ट्रैफिक नियमों का पालन करना चाहिए।
1. सामूहिक शीघ्र संचरण Mass Rapid Transit जैसे - मेट्रो
2. ट्रेन।
सार्वजनिक बस सेवाओं में सुधार
3. द्रुतगामी मार्ग (एक्सप्रेस वे) - 6 या 8 लेन के राजमार्ग।
4.

1.2. महामार्ग (Highways) -

- दूरस्थ भागों के स्थानों को जोड़ने वाली पक्की सड़के।
- बिना बाधा के यातायात का आवागमन।
- 80 मी. चौड़ी, दोहरे मार्ग, पुल व फ्लाई ओवर।
- उत्तरी अमेरीका में महामार्गों का उच्च घनत्व। (0.65 km/km²)
- उत्तरी अमेरीका ट्रांस - कनाडियन महामार्ग : वैंकुवर - सेंट जॉन
- अलास्का महामार्ग : एडमंटन - एंकोरेज।
- पैन - अमेरिकन महामार्ग के द्वारा दक्षिण अमेरिका, मध्य अमेरिका के देश और संयुक्त राज्य अमेरिका तथा कनाडा भी आपस में जुड़ जायेंगे।
- पार महाद्वीपीय स्टुवर्ट महामार्ग (आस्ट्रेलिया)
- x रूस में यूराल के पश्चिम में महामार्ग इतने महत्वपूर्ण नहीं है जितने रेलमार्ग।
- रूस में यूराल के पश्चिम में स्थित औद्योगिक प्रदेश के महामार्गों के अत्यधिक सघन जाल का विकास हुआ जिसकी धुरी, मास्को है
- अत्यधिक विस्तृत भौगोलिक क्षेत्रफल के कारण रूस में महामार्ग इतने महत्वपूर्ण नहीं है जितने रेलमार्ग
- चीन में महामार्ग क्रिस - क्रॉस करते है।
- भारत में अनेक महामार्ग पाए जाते है। उदाहरणस्वरूप राष्ट्रीय महामार्ग संख्या 7 (पुराना क्रमांक) जो वाराणसी को

RaiSahni.in

कन्याकुमारी से जोड़ता है, देश का सबसे लम्बा राष्ट्रीय महामार्ग है।

- अफ्रीका में एक महामार्ग उत्तर में स्थित लम्बा राष्ट्रीय महामार्ग है- आल्जियर्स को गुयामा के कोनाक्री से जोड़ता है। ऐसे ही कैरो, केपटाउन से जुड़ा हुआ है।

1.3 सीमावर्ती सड़के (Border Roads)

अन्तर्राष्ट्रीय सीमा के सहारे बनाई गई सड़के

1. सुदूर क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को प्रमुख नगरों से जोड़ना।
2. प्रतिरक्षा (डिफेंस) प्रदान करने में सहायक
3. गाँवों व सैन्य शिविर तक वस्तुएं पहुंचाना।
4.

रेलमार्ग परिवहन (Railway Transport)

लम्बी दूरी तक परिवहन की विधा

- यूरोप में विश्व का संघनतम रेलतंत्र पाया जाता है।
बेल्जियम - सर्वाधिक रेल घनत्व (6.5 km/100 km²)
इंग्लैण्ड - यूरो टनल ग्रुप - सुंरगा मार्ग लंदन - पेरिस
- उत्तरी अमेरिका - सर्वाधिक विस्तृत रेल मार्ग विश्व के कुल रेलमार्गों का 40% है।
- दक्षिणी अमेरिका - दो प्रदेशों में सघन रेलमार्ग
(1) अर्जेन्टाइना का पम्पास प्रदेश
(2) ब्राजील का कॉफी उत्पादक प्रदेश (फेजेन्डा)

- अफ्रीका - केवल 40000 km लम्बा रेलमार्ग। इसमें भी दक्षिण अफ्रीका में
बेंगुएला रेलमार्ग, तंजानिया 18000 km. रेलमार्ग
- एशिया - जापान, चीन, भारत के घने बसे क्षेत्रों में सघन रेलमार्गों का घनत्व

Rajsarthi.in

2.2. पार महाद्वीपीय रेलमार्ग
पूरे महाद्वीप से गुजरते हुए दो छोरों को जोड़ते हैं।
इसका निर्माण आर्थिक व राजनैतिक कारणों से विभिन्न दिशाओं में लम्बी यात्राओं के लिए किया गया।

प्रमुख रेलमार्ग

★ (1) पार साइबेरियन रेलमार्ग, रूस।
- विश्व का सर्वाधिक लम्बा - 9622 km.
- पश्चिमी छोर - सेंट पीटर्सबर्ग,
- पूर्वी छोर - व्लाडिवोस्टक
- दोहरा पथ - इलेक्ट्रिक ट्रेन
- यूराल पर्वत - ओब येनीसी नदी
- कृषि केन्द्र - चीता

2. पार कैनेडियन रेलमार्ग, कनाडा। 7050 km.
- पश्चिम - वैंकूवर को
- पूर्व - हेलिफेक्स
- यह रेलमार्ग कनाडा की आर्थिक धमनी कहलाता है।

निर्माण - 1886 में एक संधि के तहत पश्चिमी तट पर स्थित ब्रिटिश कोलंबिया को राज्यों के संघ में शामिल करने के उद्देश्य से किया गया।

महत्व
↓
क्यूबेक → मांट्रियल → औद्योगिक प्रदेश
- प्रेयरी की गेहूं मेखला
- उत्तर में शंकुधारी वन प्रदेश को जोड़ता है।

Rajasthani.in

(3.) आस्ट्रेलियाई पार महाद्वीपीय रेलमार्ग
पश्चिम - पर्थ
पूर्व - सिडनी

(4) संघ और प्रशान्त रेलमार्ग
USA सैन फ्रांसिस्को को न्यूयार्क से।

(5.) ऑरिएन्ट एक्सप्रेस - पेरिस - इस्तांबुल - (बैंकाक)

4. पाइपलाइन

- परिवहन का नवीन साधन है।
- इसमें जल, पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैसों का परिवहन होता है
- न्यूजीलैंड में दूध का पाइपलाइन परिवहन।
- USA की महत्त्वपूर्ण पाइपलाइन - बिग इंच। यह मेक्सिको की खाड़ी से उत्तर-पूर्वी राज्यों में तेल ले जाती है।
- विश्व में प्रस्तावित सबसे लम्बी पाइप लाइन - ईरान ⇒ भारत, वाया, पाकिस्तान।

⇒ जल परिवहन -
जल परिवहन के लाभ -
- सबसे सस्ता परिवहन का साधन क्योंकि जल का घर्षण स्थल की तुलना में कम होता है।
- इसमें मार्गों का निर्माण नहीं करना पड़ता है।
- महासागर एक दूसरे से जुड़े हुए होते हैं जिसमें विभिन्न आकार के जहाज चल सकते हैं। केवल बंदरगाह की सुविधा विकसित करनी होती है।
- इसमें ऊर्जा की बचत होती है।
- भारी सामान का लम्बी दूरियों तक परिवहन के लिए सस्ता पड़ता है।

Rasaini.in

Date.
Page. 74

महत्वपूर्ण समुद्री मार्ग

विभिन्न देशों को जोड़ने का कार्य करते हैं।

1. उत्तरी अंटलांटिक समुद्री मार्ग
- यह उत्तरी पूर्वी संयुक्त राज्य अमेरिका को पश्चिमी यूरोप से मिलाता है।
- विश्व का एक चौथाई विदेशी व्यापार इसी मार्ग से होता है।
- यह विश्व की व्यस्ततम व्यापारिक मार्ग है, इसी लिए इसे वृहद ट्रंक मार्ग कहा जाता है।

2. दक्षिणी अंटलांटिक समुद्री मार्ग
- पश्चिमी यूरोप और पश्चिमी अफ्रीका के देशों को दक्षिणी अमेरिका में ब्राजील, अर्जेंटीना और युरुग्वे से जोड़ता है।
- इस मार्ग पर यातायात बहुत कम है, क्योंकि दक्षिण अमेरिका और अफ्रीका में एक जैसे संसाधन हैं।

3. भूमध्य सागर - हिंद महासागरीय समुद्री मार्ग
- यह समुद्री मार्ग प्राचीन विश्व के हृदय स्थल कहे जाने वाले क्षेत्रों से गुजरता है।

4. उत्तमाशा अंतरीय समुद्री मार्ग
- यह पश्चिमी यूरोप को पश्चिमी अफ्रीका, दक्षिणी अफ्रीका, दक्षिणी पूर्वी एशिया और ओसेनिया को जोड़ता है।
- स्वेज नहर के निर्माण से पहले यह मार्ग लिवरपूल और कोलम्बो को जोड़ता था।

Pajsarthi.in

5\. उत्तरी प्रशान्त समुद्री मार्ग
- यह प्रशान्त महासागर के सभी मार्ग होनोलूलू में मिलते हैं।
- सीधा मार्ग वैंकूवर को योकोहामा से जोड़ता है।
- उत्तरी अमेरीका के पश्चिमी तट के पत्तनों को एशिया के पत्तनों से जोड़ता है।

6\. दक्षिण प्रशान्त समुद्री मार्ग
- यह पश्चिमी यूरोप (पनामा नहर से) और उत्तरी अमेरिका को ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, हांग कांग और इंडोनेशिया से जोड़ता है
- होनोलूलू इस मार्ग पर महत्वपूर्ण पत्तन है।

7\. तटीय नौ परिवहन
- तटीय नौ परिवहन लम्बी तट रेखा वाले देश जैसे USA, चीन और भारत के लिए आसान विधि है।
- यदि तटीय नौ परिवहन को अच्छे से विकसित किया जाए इसके द्वारा स्थल मार्गों पर होने वाली यातायात की भीड़ को कम किया जा सकता है।

8\. नौ परिवहन नहरें
- स्वेज और पनामा नहर (मानव निर्मित नहरें) ने पूर्वी और पश्चिमी विश्व को जोड़ने का काम किया है।

स्वेज नहर -
निर्माण - 1869 में मिस्र में, पोर्ट सईद व पोर्ट स्वेज के
- भूमध्य सागर और लाल सागर को जोड़ने के लिए बनाया गया एक कृत्रिम जलमार्ग है।
- यह जलबंधकों से रहित समुद्री सतह के बराबर नहर है।
\# इसकी लम्बाई लगभग 160 किमी. और गहराई 11-15 मी. है।
- इस नहर में प्रतिदिन 100 जलयान आवागमन करते हैं जिन्हें इस नहर को पार करने में 10 - 12 घंटे लगते हैं।

Rajsathi.in

- इस नहर के सहारे एक रेलमार्ग स्वेज तक जाता है और फिर इस्माइलिया से एक शाखा कैरो को जाती है।
- नील नदी से नौगम्य ताजा पानी की नहर भी स्वेज तक जा नहर से इस्माइलिया में मिलती है, जिससे पोर्ट सईद और स्वेज नहरों को ताजा पानी की आपूर्ति होती है।
- स्वेज नहरें मार्ग यूरोप को हिन्द महासागर में एक नया प्रवेश मार्ग प्रदान करता है। यह लिवरपूल और कोलम्बो के मध्य प्रत्यक्ष समुद्री मार्ग की दूरी को उत्तमाशा अंतरीप की तुलना में घटाता है।

पनामा नहर -

- यह नहर पूर्व में अंटलांटिक महासागर को पश्चिम में प्रशान्त महासागर से जोड़ती है।
- इसका निर्माण पनामा जलडमरूमध्य के आर-पार पनामा नहर एवं कोलोन के मध्य संयुक्त राज्य अमेरिका के द्वारा किया गया, जिसने दोनों ही ओर के क्षेत्र को खरीद कर इसे नहर मंडल का नाम दिया। 80 Km.
- नहर लगभग 72 Km लम्बी है जो लगभग 12 Km. लम्बी अत्यधिक गहरी कटान से युक्त है।
- नहर का सबसे बड़ा समुद्री मार्ग व समुद्री भाग समुद्र तल से 26 m. ऊँचा है।

Rajsarthi.in

8. अन्तराष्ट्रीय व्यापार

व्यापार - वस्तु को खरीदना और बेचना

राष्ट्रीय व्यापार
↓
किसी देश के भीतर होने वाला व्यापार

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार - बाहरी देशों में
↓
द्वि पार्श्विक - दो देशों के मध्य व्यापार
बहु पार्श्विक - अनेक देशों के मध्य व्यापार

→ विनिमय
→ आसाम - जोन बील मेले
→ महंगी / दुर्लभ वस्तुएँ
सैलेरी

→ सैलेरी (Salary) शब्द लैटिन भाषा के शब्द सैलेरियम (Salarium) से बना है, जिसका अर्थ है - 'नमक के द्वारा भुगतान करना'।

→ क्योंकि इस समय समुद्र के जल से नमक बनाना ज्ञात नहीं था और इसे केवल खनिज नमक से बनाया जा सकता था जो उस समय प्रायः दुर्लभ और खर्चीला था, यही वजह है कि यह भुगतान का एक माध्यम है।

- अन्तराष्ट्रीय व्यापार का इतिहास :-

→ प्राचीन समय में परिवहन साधनों की कमी के कारण केवल महंगी वस्तुओं का व्यापार किया जाता था।

Rajsarthi.in

Date. Page. 78

→ रोम और चीन के मध्य प्राचीन रेशम मार्ग लम्बी दूरी के व्यापार का एक आरंभिक उदाहरण है। (6000 Km लम्बा मार्ग)

→ 12वीं और 13वीं शताब्दी के दौरान यूरोपीय वाणिज्य में वृद्धि हुई।

→ समुद्री जलपोतों के विकास के साथ ही यूरोप तथा एशिया के मध्य व्यापार बढ़ा तथा अमेरीका की खोज हुई।

→ 15वीं शताब्दी से ही यूरोपीय उपनिवेशवाद के साथ 'दास व्यापार' की शुरुआत हुई।

→ पुर्तगालियों, डचों, स्पेनिश लोगों व अंग्रेजों ने अफ्रीकी मूल निवासियों को बलपूर्वक बागानों में श्रम हेतु अमेरीका भेजा।

→ दास व्यापार 1792 में डेनमार्क में, 1807 में ग्रेट ब्रिटेन में और 1808 में संयुक्त राज्य अमेरिका में समाप्त कर दिया।

→ औद्योगिक क्रान्ति के पश्चात् यूरोपीय देशों ने कच्चे माल को आयात किया और तैयार माल को वापस दूसरे देशों को निर्यात कर दिया।

→ प्रथम व द्वितिय विश्व युद्ध के दौरान पहली बार राष्ट्रों ने व्यापार कर और संख्यात्मक प्रतिबंध लगाए, जिसे गैट (GAtt) समझौता के बाद कम किया गया।

• अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के आधार –

1. राष्ट्रीय संसाधनों में भिन्नता –
   (i) भौगोलिक संरचना
   (ii) जलवायु
   (iii) खनिज संसाधन

2. जनसंख्या कारक –
   (i) सांस्कृतिक कारक
   (ii) जनसंख्या का आकार

Rajsarthi.in

आर्थिक विकास की प्रावस्था
3. विदेशी निवेश की सीमा
4. परिवहन
5.

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार अस्तित्व में क्यों है ?
अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार उत्पादन में विशिष्टीकरण का परिमाप है
1. अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार विशेषज्ञता और श्रम विभाजन पर निर्भर करता है।
2. अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, वस्तुओं विश्व के आर्थिक संगठन का आधार है। समय में और यह देशों की विदेश नीति से सम्बन्धित है।
3. अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार वस्तुओं और सेवाओं के तुलनात्मक लाभ, परिपुरकता व हस्तान्तरणीयता के सिद्धान्तों पर आधारित होता है।
4. विकसित परिवहन और संचार प्रणाली से अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से देशों को लाभ प्राप्त होता है जिसे कोई देश छोड़ना नही चाहता है।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के लाभ :-

+ अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से अनेक प्रकार के आर्थिक और सामाजिक, सांस्कृतिक लाभ प्राप्त होते है, जैसे-

(1) वस्तुओं के उत्पादन में वृद्धि होती है।
(2) देश की राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है।
(3) व्यर्थ पड़े संसाधन प्रयोग के आने लगते है।
(4) वस्तुओं के मुल्य में समानता आती है
(5) ज्ञान व संस्कृति के फैलाव को प्रेरित करता है।
(6) लोगों के रहन-सहन में वृद्धि करता है।
(7) वस्तुओं व सेवाओं की विश्वव्यापी उपलब्धता होती है।

RaiSahil.in

अन्तराष्ट्रीय व्यापार से सम्बन्धित मामले :-

1. प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक विदोहन होता है, जिससे वो जल्दी समाप्त हो जाते है
2. विभिन्न देशों की निर्भरता एक दूसरे पर बढ़ जाती है।
3. सस्ती विदेशी वस्तुओं के आयात से देश के अनेक उद्योगों के लिए खतरा उत्पन्न हो जाता है।
4. साधन सम्पन्न विदेशी पूंजीपति निर्बल देशों की भूमि पर अधिकतर जमाने लगते है।
5. व्यापारिक संगठन केवल लाभ कमाने की ओर लगे रहते है और पर्यावरणीय तथा स्वास्थ्य संबंधी विषयों पर ध्यान नहीं देते।

- व्यापार सन्तुलन :-

धनात्मक / अनुकूल — ↓ आयात < निर्यात ↑

ऋणात्मक / प्रतिकूल — ↑ आयात > निर्यात ↓

- मुक्त व्यापार की स्थिति :-

1. व्यापार हेतु अर्थव्यवस्थाओं को खोलने का कार्य मुक्त व्यापार अथवा व्यापार उदारीकरण कहलाता है।
2. यह कार्य व्यापारिक अवरोधों जैसे सीमा शुल्क को घटाकर किया जाता है।
3. घरेलू उत्पादों एवं सेवाओं से प्रतिस्पर्धा करने के लिए व्यापार उदारीकरण सभी स्थानों से वस्तुओं और सेवाओं के लिए अनुमति प्रदान करता है।

- लागत की दृष्टि से नहीं वरन भिन्न-2 कारणों से अलग अलग कीमत की किसी वस्तु को देशों में विक्रय करने की प्रथा डंपिंग कहलाती है।

देशों को भी डंप की गई वस्तुओं से सर्तक रहने की आवश्यकता है, क्योंकि मुक्त व्यापार के साथ इस प्रकार की सस्ते मूल्य की डंप की गई वस्तुएं घरेलू उत्पाद को को नुकसान पहुँचता सकती है।

- मुक्त व्यापार से धनी देशों को अधिक लाभ हो रहा है जिससे अमीर और गरीब देशों के मध्य की खाई बढ़ रही है

- विश्व व्यापार संगठन :-

→ 1948 मे विश्व की उच्च सीमा शुल्क और विभिन्न प्रकार की अन्य बाधाओं से मुक्त व्यापार के साथ इस प्रकार की सस्ते मूल्य की करने हेतु कुछ देशों के द्वारा जनरल एग्रीमेंट ऑन ट्रेड एण्ड टैरिफ का गठन किया (GATT)

→ 1994 मे सदस्य देशों के द्वारा राष्ट्रों के बीच मुक्त एवं निष्पक्ष व्यापार को बढ़ावे के लिए एक स्थायी संस्था के निर्माण का निश्चय किया गया।

→ 1 जनवरी 1995 मे GATT को विश्व व्यापार संगठन WTO मे रूपांतरित कर दिया गया।

मुख्यालय - जिनेवा (स्विट्जरलैंड)

→ सदस्य देश - 164 (भारत भी सम्मिलित है)

→ विश्व व्यापार संगठन एकमात्र ऐसा राष्ट्रीय संगठन है जो देशों के मध्य वैश्विक नियमों का निर्धारण करता है।

→ यह अपने सदस्य देशों के मध्य विवादों का निपटारा करता है।

→ विश्व व्यापार संगठन दूरसंचार और बैंकिंग जैसी सेवाओं तथा अन्य विषयों जैसे बौद्धिक संपदा अधिकार के व्यापार को भी अपने कार्यों मे सम्मिलित करता है।

Rajsatri.in

→ मुक्त व्यापार एवं वैश्वीकरण से परेशान लोगों ने विश्व व्यापार संगठन की आलोचना की है। क्योंकि विश्व व्यापार संगठन में प्रभावशाली राष्ट्र केवल अपने वाणिज्यिक हितों पर ध्यान केन्द्रीत करते है। यह संगठन स्वास्थ्य, श्रमिकों के अधिकार, बाल श्रम और पर्यावरण जैसे मुद्दों पर ध्यान नहीं देता।

प्रादेशिक व्यापार समूह -

→ देशों के मध्य व्यापार बढ़ने एवं विकासशील देशों के व्यापार पर लगी प्रतिबंध को हटाने के उद्देश्य से अस्तित्व में आए।
जैसे - सार्क, आसियान, यूरोपीय संघ, ओपेक आदि।

→ ये प्रादेशिक समूह सदस्य देशों मे व्यापार शुल्क को हटा देते है तथा मुक्त व्यापार को बढ़ावा देते है लेकिन भविष्य में विभिन्न व्यापारिक समूहों के मध्य मुक्त व्यापार का बना रहना कठिन बनता जा रहा है।

पत्तन व पोताश्रय

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के प्रवेश द्वार पत्तन →

→ जहाजों पर यात्रियों को चढ़ाने और उतारने, माल के लदान और उतरान व भण्डारण हेतु सुविधाएँ प्रदान करते है।

→ एक पत्तन के महत्व को नौभार के आकार और निपटान किए गए जहाजों की संख्या द्वारा निश्चित किया जाता है।

→ एक पत्तन द्वारा निपटाया नौभार, उसके पृष्ठ प्रदेश के विकास के स्तर का सूचक है।

पोताश्रय:- गहरे जल का विस्तृत ...

पतन के प्रकार (वर्गीकरण) -

सामान्यतः पतनों का वर्गीकरण उनके द्वारा संभाले गए यातायात के प्रकार के अनुसार किया जाता है।

1. निपटाए गए नौभार के अनुसार पतनों के प्रकार -
(i) औद्योगिक पतन
(ii) वाणिज्यक पतन
(iii) विस्तृत पतन

2. अवस्थिती के आधार पर पतनों के प्रकार -
(i) अन्तर्देशीय पतन
(ii) बाह्य पतन

3. विशिष्ट्कृत कार्यालयों के आधार पर पतनों के प्रकार -
(i) तेल पतन
(ii) मार्ग पतन (विश्राम पतन)
(iii) पैकेट पतन (फेरी पतन)
(iv) आंत्रपो पतन
(v) नौ-सेना पतन

⇒ निपटाए गए नौभार के अनुसार पतनों के प्रकार -

(i) औद्योगिक पतन :- ये पतन थोक नौभार (बल्क कार्गो) के लिए विशिष्कृत होते हैं।
- अनाज, चीनी, अयस्क, तेल, रसायन आदि।

(ii) वाणिज्य पतन -
ये पतन थोक नौभार तथा सामान्य नौभार

RajSathi.in

दोनों के लिए विशेषीकृत होते हैं।
ये पत्तन भारी यातायात का भी प्रबंध करते हैं।

(iii) विस्तृत पत्तन :-
ये पत्तन थोक नौभार तथा सामान्य नौभार दोनों के लिए विशेषीकृत होते हैं।
संसार के अधिकांश महान पत्तन विस्तृत पत्तनों के रूप में वर्गीकृत किए गए हैं।

अवस्थिति के आधार पर पत्तनों के प्रकार

1. अन्तर्देशीय पत्तन -
- ये पत्तन समुद्री तट से दूर स्थलखण्ड के भीतर स्थित होते हैं। और नदी अथवा नहर द्वारा समुद्र से जुड़े होते हैं।
- ऐसे पत्तन चौरस तल वाले जहाज या बजरे द्वारा ही गम्य होते हैं।
- जैसे - ब्रिटेन में मेनचेस्टर, राइन नदी पर मैनहीन तथा मिसीसिपी नदी पर मेंफिस एवं हुगली नदी पर कोलकाता।

2. बाह्य पत्तन
→ ये गहरे जल के पत्तन हैं जो वास्तविक पत्तन से दूर बने होते हैं।
→ जब जलपोत बड़े आकार के होने के कारण या वास्तविक पत्तन में अधिक अवसाद जमाव के कारण वास्तविक पत्तन तक नहीं पहुँच पाते हैं तो इन पत्तनों का प्रयोग किया जाता है।
जैसे- यूनान में एथेंस का बाह्य पत्तन पिरेडअस है

Rajsathi.in

विशिष्टीकृत कार्यकलापों के आधार पर पत्तनों के प्रकार

1. तेल पत्तन
→ इन पत्तनों पर मुख्यतः तेल का आयात - निर्यात होता है।
→ इनमें से कुछ ऐसे पत्तन है जहाँ तेल के टैंकर खड़े किए जाते है। इन्हें टैंकर पत्तन कहा जाता है।
वेनेजुएला का माराकाइबो, ट्युनिशिया का एस्सखीरा, लेबनान में त्रिपोली
→ कुछ अन्य पत्तनों पर तेलशोधन शालाएँ (रिफाइनरी) भी स्थापित की गई हैं जिन्हें रिफाइनरी पत्तन कहते है।
→ पर्शिया (फारस की खाड़ी पर अब्दान एक तेलशोधन पत्तन है।

2. मार्ग पत्तन (विश्राम पत्तन) -

ये ऐसे पत्तन है जहाँ जलपोत ईंधन व खाना लेने के लिए रुकते हैं।
अदन, होनोलूलू तथा सिंगापुर।

3. पैकेट पत्तन -
→ इन्हे फेरी पत्तन भी कहा जाता है।
→ ये पत्तन विशेष रूप से छोटी दुरियों को तय करते हुए जलीय क्षेत्रों के आर - पार डाक तथा यात्रियों के परिवहन से जुड़े होते है। इनके ठहरने के स्थान को पैकेट स्टेशन कहा जाता है।
→ इंग्लिश चैनल के आर - पार, इंग्लैंड में डॉवर तथा फ्रांस में कैलाइस

Rajsarthi.in

आंत्रपो पतन:-
4. ये पतन एक देश के माल को दूसरे देश में भेजने का
→ कार्य करते है। इसमें माल का भंडार बड़े-2 गोदामों में किया जाता है। और दूसरे देशों को भेजा जाता है।
जैसे - सिंगापुर एशिया के लिए एक आंत्रपो पतन है, रोटरडम यूरोप के लिए और कोपेन हेगेन, व बाल्टिक क्षेत्र के लिए आंत्रपो पतन

नौ सेना पतन:-
5. ये केवल सामरिक महत्व के पतन है।
यहाँ पर नौ सेना के लड़ाकु जहाजों को खड़ा करने, उनकी मरम्मत करने तथा लंगर डालने की व्यवस्था होती है।
जैसे - कोच्चि तथा कारवाड़ भारत में ऐसे पतनों के उदाहरण है।

Rajsarthi.in